

अबुल हसन हज़रत इमाम अली नक़ी

(अ.स.)

(चौदह सितारे)

लेखक: नजमुल हसन करारवी

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीए अपने पाठको के लिये टाइप कराई गई है और इस किताब मे टाइप वगैरा की ग़लतीयो को ठीक किया गया है।

Alhassanain.org/hindi

अली का नाम और खुलके हसन लेकर मौहम्मद का
नकी दुनिया में आये, दीन है महवे, सना ख्वानी
सितारा औज पर है, दसवीं मन्जिल का इमामत का
तकी के घर में नाजिल हो रहा है नूरे यज़दानी
(साबिर थरयानी कराची)

आज दसवां नाएबे खैरूल बशर पैदा हुआ
हैं लक़ब हादी, नकी, जिसके अली है जिसका नाम
रहबरे दीने खुदा हैं, यह मौहम्मद का पिसर
इतरते अतहार में चौथा अली आली मक़ाम

वालैदेन

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) पैग़म्बरे इस्लाम मौहम्मद (स.व.व.अ.) के
दसवें जानशीन और हमारे दसवें इमाम और सिलसिला ए मासूमीन की बारवीं कड़ी
हैं। आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मौहम्मद तकी (अ.स.) थे और वालदा
माजदा जनाबे समाना खातून थीं। आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमाम
मनसूस, मासूम ए आलम, ज़माना और अफज़ल काएनात थे। आप इल्म सखावत

तहारते नफ़स, बुलन्दी ए किरदार और जुमला सिफ़ात हसना में अपने वालिद माजिद की जीती जागती तस्वीर थे।

(सवाएके मोहरेका सफ़ा 123 मतालेबुस सूऊल सफ़ा 291 नूरुल अबसार सफ़ा 149)

आपकी वालेदा के मुताअल्लिक उलमा ने लिखा है कि आप सैय्यदा उम्मुल फ़ज़ल के नाम से मशहूर थीं।

(मनाकिब जिल्द 5 सफ़ा 116)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) की विलादते बासआदत

आप ब तारीख 5, रज्जबुल मुरज्जब 214 हिजरी बरोज़ सेह शम्बा बामुक़ाम मदीना ए मुनव्वरा मुतावल्लिद हुए। नूरुल अबसार सफ़ा 149, दम ए साकेबा सफ़ा 120, शेख मुफ़ीद का कहना है कि मदीने के करीब एक करिया है जिसका नाम सरया है, आप वहां पैदा हुए।

इस्मे गिरामी, कुन्नीयत और अलक्राब

आपका इस्मे गिरामी अली आपके वालिदे माजिद इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) ने रखा इसे यूँ समझना चाहिये कि सरवरे काएनात (स.व.व.अ.) ने जो अपने बारह जानशीन अपनी ज़ाहेरी हयात के ज़माने में मोअयन फ़रमाये थे। उनमें से एक आपकी ज़ाते गिरामी भी थी। आपके वालिदे माजिद ने उसी मोअयन नाम से

मौसूम कर दिया। अल्लामा तबरसी लिखते हैं कि चौदह मासूमीन (अ.स.) के असमा नाम लौहे महफूज़ में लिखे हुए हैं। सरवरे काएनात स. ने उसी के मुताबिक सब के नाम मुअयन फ़रमाये हैं और हर एक के वालिद ने उसी की रौशनी में अपने फ़रज़न्द को मौसूम किया है। अल्लामा अल वरा सफ़ा 225, किताब कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा 4 में है कि आं हज़रत ने सब के नाम हज़रत आयशा को लिखवा दिये थे। आपकी कुन्नियत अबुल हसन थी। आपके अलकाब बहुत ज़्यादा हैं। जिनमें नक्री, नासेह, मोतावक्किल, मुर्तुज़ा और असकरी ज़्यादा मशहूर हैं।

(कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा 122 नूरुल अबसार सफ़ा 149, मतालेबुस सूऊल सफ़ा 191)

आपके अहदे हयात और बादशाहाने वक़्त

आप जब 214, हिजरी में पैदा हुए तो उस वक़्त बादशाहाने वक़्त मामून रशीद अब्बासी था। 218 ई0 में मामून रशीद ने इन्तेक़ाल किया और मोतासिम खलीफ़ा हुआ अबुल फ़िदा 227, हिजरी में वासिक़ इब्ने मोतासिम खलीफ़ा बनाया गया अबुल फ़िदा 232 हिजरी वासिक़ का इन्तेक़ाल हुआ और मुतावक्किल अब्बासी खलीफ़ा मुकर्रर किया गया। अबुल फ़िदा फिर 247 हिजरी में मुग़तसिर बिन मुतावक्किल और 248 हिजरी में मुस्तईन और 252 हिजरी में जुबेर इब्ने मुतावक्किल अलमकनी व “मोताज़बिल्लाह अलत तरतीब खलीफ़ा बनाए गए।

अबुल फ़िदा दमतुस् साकेबा 254 हिजरी में मोताज़ के ज़हर देने से इमाम नकी (अ.स.) शहीद हुए।

(तज़किरातुल मासूमीन)

हज़रत इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) का सफ़रे बग़दाद और हज़रत इमाम नकी (अ.स.) की वली अहदी

मामून रशीद के इन्तेक़ाल के बाद जब मोतासिम बिल्लाह खलीफ़ा हुआ तो उसने भी अपने अबाई किरदार को सराहा और ख़ानदानी रवये का इत्तेबा किया। उसके दिल में भी आले मौहम्मद की तरफ़ से वही जज़बात उभरे जो उसके आबाओ अजदाद के दिलों में उभर चुके थे, उसने भी चाहा कि आले मौहम्मद स. की कोई फ़र्द ज़मीन पर बाक़ी न रहे। चुनाचे उसने तख़्त नशीं हाते ही हज़रत इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) को मदीने से बग़दाद तलब कर के नज़र बन्द कर दिया। इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) जो अपने आबाओ अजदाद की तरह क़यामत तक के हालात से वाकिफ़ थे। मदीने से चलते वक़्त अपने फ़रज़न्द को अपना जां नशीन मुक़रर कर दिया और वह तमाम तबरूकात जो इमाम के पास हुआ करते हैं आपने इमाम नकी (अ.स.) के सिपुर्द कर दिए। मदीने मुनव्वरा से रवाना हो कर आप 9 मोहर्रमुल हराम 220 हिजरी को वारिदे बग़दाद हुए। बग़दाद मे आपको एक

साल भी न गुज़रा था कि मोतसिम अब्बासी ने आपको ब तारीख 29 ज़िकाद 220 हिजरी मे ज़हर से शहीद कर दिया।

(नूरूल अबसार सफ़ा 147)

उसूल काफ़ी में है कि जब इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) को पहली बार मदीने से बग़दाद तलब किया गया तो रावीये ख़बर इस्माइल बिन महरान ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा: मौला। आपको बुलाने वाला दुश्मने आले मौहम्मद है। कहीं ऐसा न हो कि हम बे इमाम हों जायें। आपने फ़रमाया कि हमको इल्म है तुम घबराओ नहीं इस सफ़र में ऐसा न होगा।

इस्माइल का बयान है कि जब दोबारा आपको मोतासिम ने बुलाया तो फिर मैं हाज़िर हो कर अर्ज़ परदाज़ हुआ कि मौला यह सफ़र कैसा रहेगा? इस सवाल का जवाब आपने आसुओं के तार से दिया और ब चश्में नम कहा कि ऐ इस्माइल मेरे बाद अली नक़ी को अपना इमाम जानना और सब्र ज़ब्त से काम लेना।

(तज़किरातुल मासूमीन सफ़ा 217)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) का इल्मे लदुन्नी

बचपन का एक वाक़िया

यह हमारे मुसल्लेमात से है कि हमारे अइम्मा को इल्मे लदुन्नी होता है। यह खुदा की बारगाह से इल्म व हिकमत ले कर कामिल और मुकम्मिल दुनियां में

तशरीफ़ लाते हैं। उन्हे किसी से इल्म हासिल करने की ज़रूरत नहीं होती है और उन्होने किसी दुनियां वाले के सामने ज़ानु ए अदब तक नहीं फ़रमाया ज़ाती इल्म व हिकमत के अलावा मज़ीद शरफ़े कमाल की तहसील अपने आबाओ अजदाद से करते रहे, यही वजह है कि इन्तेहाई कमसिनी में भी यह दुनियां के बड़े बड़े आलिमों को इल्मी शिकस्त देने में हमेशा कामियाब रहे और जब किसी ने फ़रद से माकूफ़ समझा तो ज़लील हो कर रह गया, फिर सरे ख़म तसलीम करने पर मजबूर हो गया।

अल्लामा मसूदी का बयान है कि हज़रत इमाम मौहम्मद तक़ी (अ.स.) की वफ़ात के बाद इमाम अली नक़ी (अ.स.) जिनकी उस वक़्त उमर 6- 7 साल की थी मदीने में मरजए ख़लाएक़ बन गए थे, यह देख क रवह लोग जो आले मौहम्मद से दिली दुश्मनी रखते थे यह सोचने पर मजबूर हो गये कि किसी तरह इनकी मरकज़ियत को ख़त्म कर दिया जाए और कोई ऐसा मोअल्लिम इनके साथ लगा दिया जो उन्हें तालीम भी दे और इनकी अपने उसूल पर तरबीयत करने के साथ उनके पास लोगों के पहुंचने का सद्दे बाब करें। यह लोग इसी ख़याल में थे उमर बिन फ़जर् रहजी फ़रागते हज के बाद मदीना पहुंचा लोगों ने उस से अरज़ किया, बिल आख़िर हुकूमत के दबाव से ऐसा इन्तेज़ाम हो गया कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) को तालीम देने के लिए ईराक़ का सब से बड़ा आलम, आबिद अब्दुल्लाह जुनीदी माकूल मुशाहेरा पर लगाया गया यह जुनीदी आले मौहम्मद स.

की दुशमनी में खास शोहरत रखता था। अलगरज़ जुनीदी के पास हुकूमत ने इमाम अली नकी (अ.स.) को रख दिया और जुनीदी को खास तौर पर इस अमर की हिदायत कर दी कि उनके पास रवाफिज़ न पहुंचने पाएं। जुनीदी ने आपको कसर सरबा में अपने पास रखा। होता यह था कि जब रात होती थी तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था और दिन में भी शियों को मिलने की इजाज़त न थी। इसी तरह आपके मानने वालों का सिलसिला मुनक़ता हो गया और आपका फ़ैज़े जारी बन्द हो गया लोग आपकी ज़ियारत और आपसे इस्तेफ़ादे से महरूम हो गये। रावी का बयान है कि मैंने एक दिन जुनीदी से कहा, गुलाम हाशमी का क्या हाल है? उसने निहायत बुरी सूरत बना कर कहा, उन्हें गुलाम हाशमी न कहो, वह रईसे हाशमी हैं। खुदा की कसम वह इस कमसिनी में मुझ से कहीं ज़्यादा इल्म रखते हैं। सुनो मैं अपनी पूरी कोशिश के बाद जब अदब का कोई बाब उनके सामने पेश करता हूँ तो वह उसके मुताल्लिक ऐसे अबवाब खोल देते हैं कि मैं हैरान रह जाता हूँ। लोग समझ रहे हैं कि मैं उन्हें तालीम दे रहा हूँ लेकिन खुदा की कसम मैं उनसे तालीम हासिल कर रहा हूँ। मेरे बस में यह नहीं कि मैं उन्हें पढ़ा सकूँ। खुदा की कसम वह हाफिज़े कुरआन ही नहीं वह उसकी तावील व तन्ज़ील को भी जानते हैं और मुखतसर यह कि वह ज़मीन पर बसने वालों में सब से बेहतर और काएनात में सब से अफ़ज़ल हैं।

(असबात उल वसीयत दमतुस् साकेबा सफ़ा 121)

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के करामात और आपका

इल्मे बातिन

इमाम अली नकी (अ.स.) तक़रीबन 29 साल मदीना मुनव्वरा क़याम पज़ीर रहे। आपने इस मुद्दते उमर में कई बादशाहों का ज़माना देखा। तक़रीबन हर एक ने आपकी तरफ़ रूख़ करने से ऐहतिराज़ किया। यही वजह है कि आप उमूरे इमामत को अन्जाम देने में कामयाब रहे। आप चूंकि अपने आबाओ अजदाद की तरह इल्मे बातिन और इल्मे ग़ैब भी रखते थे। इसी लिए आप अपने मानने वालों को होने वाले वाक़ियात से बा ख़बर फ़रमा दिया करते थे और कोशिश फ़रमाते थे कि मक़दूरत के अलावा कोई ग़ज़न्द न पहुंचने पाए इस सिलसिले में आपके करामात बे शुमार हैं जिनमें से हम इस मक़ाम पर किताब कशफ़ुल गुम्मा से चन्द करामात तहरीर करते हैं।

1. मौहम्मद इब्ने फरज रहजी का बयान है कि हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) ने मुझे तहरीर फ़रमाया कि तुम अपने तमाम उमूर व मामलात को रास्त और निज़ामे ख़ाना को दुरूस्त कर लो और अपने असलहों को सम्भाल लो। मैंने उनके हुक़म के बामोज़िब तमाम दुरूस्त कर लिया लेकिन यह न समझ सका यह हुक़म आपने क्यों दिया लेकिन चन्द दिनी के बाद मिस्र की पुलिस मेरे यहां आई

और मुझे गिरफ्तार कर के ले गई और मेरे पास जो कुछ था। सब ले लिया और मुझे कैद खाने में बन्द कर दिया। मैं आठ साल इस कैद खाने में पडा रहा। एक दिन इमाम (अ.स.) का खत पहुंचा, जिसमें मरकूम था कि ऐ मौहम्मद बिन फ़ज्र, तुम उस रास्ते की तरफ़ न जाना जो मगरिब की तरफ़ वाक़े है। खत पाते ही मेरी हैरानी की कोई हद न रही। मैं सोचता रहा कि मैं तो कैद खाने में हूं मेरा तो उधर जाना मुम्किन ही नहीं फिर इमाम ने क्यों यह कुछ तहरीर फ़रमाया? आपके खत आने को अभी दो चार ही दिन गुज़रे थे कि मेरी रेहाई का हुक्म आ गया और मैं उनके हुक्म के मुताबिक उस तरफ नही गया कि जिसको आपने मना किया था। कैद खाने से रेहाई के बाद मैंने इमाम (अ.स.) को लिखा कि हुज़ूर मैं कैद से छूट कर घर आ गया हूं। अब आप खुदा से दुआ फ़रमाएँ कि मेरा माल मग़सूबा वापस करा दें। आपने उसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि अन्क़रीब तुम्हारा सारा माल तुम्हें वापस मिल जाएगा चुनांचे ऐसा ही हुआ।

2. एक दिन इमाम अली नक़ी (अ.स.) और अली बिन हसीब नामी शख़्स दोनों साथ ही रास्ता चल रहे थे। अली बिन हसीब आपसे चन्द गाम आगे बढ़ कर बोले, आप भी क़दम बढ़ा कर जल्द आजाएं हज़रत ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने हसीब तुम्हें पहले जाना है। तुम जाओ इस वाक़िए के चार दिन बाद इब्ने हसीब फ़ौत हो गए।

3. एक शख़्स मौहम्मद बिन फ़ज़ल बग़दादी नामी का बयान है कि मैंने हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) को लिखा कि मेरे पास एक दुकान है मैं उसे बेचना

चाहता हूं आपने उसका जवाब न दिया। जवाब न मिलने पर मुझे अफ़सोस हुआ। लेकिन जब मैं बग़दाद वापस पहुंचा तो वह आग लग जाने की वजह से जल चुकी थी।

4. एक शख्स अबू अय्यूब नामी ने इमाम (अ.स.) को लिखा कि मेरी ज़ौजा हामेला है, आप दुआ फ़रमाएं कि लड़का पैदा हो। आप ने फ़रमाया इन्शा अल्लाह उसके लड़का ही पैदा होगा और जब पैदा हो तो उसका नाम मौहम्मद रखना। चुनांचे लड़का ही पैदा हुआ, और उसका नाम मौहम्मद ही पैदा रखा गया।

5. यहिया बिन ज़करिया का बयान है कि मैंने इमाम अली नक़ी (अ.स.) को लिखा कि मेरी बीवी हामेला है आप दुआ फ़रमाएं कि लड़का पैदा हो। आपने जवाब में तहरीर फ़रमाया कि बाज़ लड़कियां लड़कों से बेहतर होती हैं, चुनांचे लड़की पैदा हुई।

6. अबू हाशिम का बयान है कि मैं 227 हिजरी में एक दिन हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर था कि किसी ने आकर कहा कि तुर्कों की फ़ौज गुज़र रही है। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया कि ऐ अबू हाशिम चलो इन से मुलाकात करें। मैं हज़रत के हमराह हो कर लश्करियों तक पहुंचा। हज़रत ने एक गुलाम तुर्की से इसकी ज़बान में गुफ़्तगू शुरू फ़रमाई और देर तक बातें करते रहे। उस तुर्की सिपाही ने आपके कदमों का बोसा दिया। मैंने उस से पूछा कि वह कौन

सी चीज़ है जिसने तुझे इमाम का गिरवीदा बना दिया? उसने कहा: इमाम ने मुझे उस नाम से पुकारा जिसका जानने वाला मेरे बाप के अलावा कोई न था।

7. तिहत्तर ज़बानों की तालीम:

अबू हाशिम कहते हैं कि मैं एक दिन हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुझ से हिन्दी ज़बान में गुफ़तगू की जिसका मैं जवाब न दे सका, तो आपने फ़रमाया कि मैं अभी अभी तुम्हें तमाम ज़बानों का जानने वाला बनाए देता हूँ। यह कह कर आपने एक संग रेज़ा उठाया और उसे अपने मुंह में रख लिया उसके बाद उस संग रेज़े को मुझे देते हुए फ़रमाया कि इसे चुसो। मैंने मुँह में रख कर उसे अच्छी तरह चूसा, उसका नतीजा यह हुआ कि मैं तेहत्तर ज़बानों का आलिम बन गया। जिनमें हिन्दी भी शामिल थी। इसके बाद से फिर मुझे किसी ज़बान के समझने और बोलने में दिक्कत न हुई। पेज न. 122 से 125

8. इमाम अली नक़ी (अ.स.) के हाथों में रेत का सोने में बदल जाना

आइम्माए ताहेरीन के उलील अम्र होने पर कुरान मजीद की नस सरीह मौजूद है। इनके हाथों और ज़बान में खुदा वन्दे आलम ने यह ताक़त दी है कि वह जो कहे हो जाए, जो इरादा करें उसकी तकमील हो जाए। अबू हाशिम का बयान है कि एक दिन मैंने इमाम अली नक़ी (अ.स.) की खिदमत में अपनी तंग दस्ती की शिकायत की। आपने फ़रमाया बड़ी मामूली बात है तुम्हारी तकलीफ़ दूर हो जाएगी।

उसके बाद आपने रमल यानी रेत की एके मुठ्ठी ज़मीन से उठा कर मेरे दामन में डाल दी और फ़रमाया इसे गौर से देखो और इसे फ़रोख्त कर के काम निकालो।

अबू हाशिम कहते हैं कि खुदा की क़सम जब मैंने उसे देखा तो वह बेहतरीन सोना था, मैंने उसे बाज़ार ले जा कर फ़रोख्त कर दिया।

(मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द 6 सफ़ा 119)

9. इमाम अली नक़ी (अ.स.) और इस्मे आज़म

हज़रत सुक़क़तुल इस्लाम अल्लामा कुलैनी उसूले काफ़ी में लिखते हैं कि इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने फ़रमाया, इस्म अल्लाहुल आज़म 73 हुरूफ़ में इनमें से सिर्फ़ एक हरफ़ आसिफ़ बरख़िया वसी सुलेमान को दिया गया था जिसके ज़रिए से उन्होंने चश्मे ज़दन में मुल्के सबा के तख़्ते बिलक़ीस मंगवा लिया था और इस मंगवाने में यह हुआ था कि ज़मीन सिमट कर तख़्त को करीब ले आई थी, ऐ नौफ़ली रावी खुदा वन्दे आलम ने हमें इस्मे आज़म के 72 हुरूफ़ दिये हैं और अपने लिये सिर्फ़ एक हरफ़ महफूज़ रखा है जो इल्मे ग़ैब से मुताअल्लिक़ है।

मसूदी का कहना है कि इसके बाद इमाम ने फ़रमाया कि खुदा वन्दे आलम ने अपनी कुदरत और अपने इज़्ने इल्म से हमें वह चीज़े अता कि हैं जो हैरत अंगेज़ और ताज्जुब ख़ैज़ हैं। मतलब यह है कि इमाम जो चाहें कर सकते हैं। उनके लिए कोई रूकावट नहीं हो सकती।

(उसूले काफ़ी - मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जिल्द 5 सफ़ा 118 व दमतुस् साकेबा सफ़ा 126)

इमाम अली नकी (अ.स.) और साल के चार अहम रोज़े

10. शेख अबू जाफ़र तूसी किताब मिसबाह में लिखते हैं कि इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह अलवी अरीज़ी हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की खिदमत में बा मुक़ाम सरय्या मदीना हाज़िर हुए। इमाम (अ.स.) ने उन्हें देख कर फ़रमाया, मैं जानता हूँ कि तुम्हारे बाप और तुम्हारे चचा के दरमियान यह अमर ज़ेर बहस है कि साल के वह कौन से रोज़े हैं कि जिनका रखना बहुत ज़्यादा सवाब रखता है और तुम इसी के मुताल्लिक़ मुझ से सवाल करने आए हो। उसने कहा ऐ मौला बस यही बात है कि आपने फ़रमाया सुनो वह चार रोज़े हैं जिनके रखने की ताकीद है।

1. यौमे विलादत हज़रत पैग़म्बरे इस्लाम स. 17 रबीउल अव्वल।
2. यौमे बैसत व मेराज 27 रजबुल मुरज्जब।
3. यौमे दहवुल अर्ज़ यानी जिस दिन काबे के नीचे से ज़मीन बिछाई गई और सफ़ीना ए नूह कोह जूदी पर ठहरा जिसकी तारीख 25 ज़ीकाद है।
4. यानी यौमें अल ग़दीर जिस दिन हज़रत रसूले ख़ुदा स. ने हज़रत अली (अ.स.) को अपने जानशीन होने का ऐलान आम फ़रमाया जिसकी तारीख 18 ज़िल हिज है।

ऐ अरीज़ी जो इन दिनों में से किसी दिन भी रोज़ा रखे। उसके साथ और सत्तर साला गुनाह बख़शे जाते हैं।

(किताब मनाकिब जिल्द 5 सफ़ा 123 व दम ए साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 123)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) और मुतावक़िल की तख़्त नशीनी

यह मानी हुई बात है कि मौहम्मद स. व आले मौहम्मद स. उन तमाम उमूर से वाक़िफ़ होते हैं जिनसे अवाम उस वक़्त तक ब खबर नहीं होते जब तक वह मन्ज़रे आम पर न आजायें। इमाम शिबलन्जी लिखते हैं कि वासिक् का एक मुहं चढ़ा रफ़ीक़ अस्बाती एक दिन ईराक़ से मदीना मुनक्वरा पहुंचां और वहां जा कर इमाम अली नक़ी (अ.स.) से मिला। आपने ख़ैर ख़ैरियत दरयाफ़त करने के बाद फ़रमाया कि वासिक् बिल्लाह ख़लीफ़ा ए वक़्त का क्या हाल है? उसने कहा मैंने उसे ब सलामत छोड़ा और वह बिल्कुल बख़ैरियत है, मैं उसका भेजा हुआ यहां आया हूं। आपने फ़रमाया लोग कहते हैं कि वह फ़ौत हो गया है। यह सुन कर अस्बाती ने सुकूत इख़तेयार किया और समझा कि यह जो आपने फ़रमाया है, बइल्मे इमामत फ़रमाया है कि हो सकता है कि दुरूस्त हो। फिर आपने कहा अच्छा यह बताओ कि इब्ने अज़यात किस हाल में है? उसने अर्ज़ कि वह वह भी अच्छा खासा है। बिल्कुल ख़ैरियत से है। इस वक़्त उसी का तूती बोलती है और इसी का हुक्म चलता है। आपने इरशाद फ़रमाया: ऐ अस्बाती सुनों हुक्में खुदा को

कोई नहीं टाल सकता और कलमे कुदरत को कोई नहीं रोक सकता। वासिक का इन्तेकाल हो गया है और मुतावक्किल तख्त नशीने खिलाफत हो गया है और इब्ने अज़यात क़त्ल कर दिया गया है। अस्बाती ने चौंक कर पूछा: या हज़रत यह सब कैसे हो गया है? मैं तो सबको ख़ैरियत व आफ़ियत में छोड़ कर आया हूँ। आपने फ़रमाया तुम्हारे ईराक़ से निकलने के छः दिन बाद यह इन्केलाब आया है। इसके बाद अस्बाती आप से रूख़सत हो कर शहर में किसी मुक़ाम पर जा ठहरा। चन्द दिनों के बाद मुतावक्किल का नामा बर मदीना पहुंचा तो बिल्कुल उन्हीं हालात का इन्केशाफ़ हुआ जिनकी ख़बर इमामे ज़माना दे चुके थे। नूरुल अबसार सफ़ा 149, प्रकाशित मिस्र मुवर्रिख़ अलवर्दी लिखते हैं कि यह वाक़िया 232 हिजरी का है तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन में है कि इब्ने अलज़यारत वज़ीर था उसके क़त्ल होते ही मोतावक्किल ने अपना वज़ीर फतेह इब्ने ख़क़ान को बनाया जो बहुत ज़ेहीन व ज़की था।

(फ़ेहरिस्त इब्ने नदीम सफ़ा 175)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) और सहीफ़ा ए कामेला की

एक दुआ

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के एक सहाबी सबा बिन हमज़तुल कुम्मी ने एक को तहरीर किया कि मौला मुझे ख़लीफ़ा मोतासिम वज़ीर से बहुत दुख पहुंच

रहा है, मुझे इसका भी अन्देशा है कि कहीं वह मेरी जान न ले ले। हज़रत ने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि घबराओ नहीं और दुआ ए सहीफ़ा ए कामेला यामन तहलो बेहा अक़दा अलमकाराहा अलख, पढ़ो मुसीबत से नजात पाओगे। यसआ बिन हमज़ा का बयान है कि मैंने इमाम के हस्बे अल हुक्म नमाज़ सुबहा के बाद इस दुआ की तिलावत की जिसका पहले ही दिन यह नतीजा निकला कि वज़ीर खुद मेरे पास आया मुझे अपने हमराह ले गया और लिबासे फ़ख़रा पहना कर मुझे बादशाह के पहलू में बिठा दिया।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के आबाओ अजदाद की क़ब्रों के साथ मोतावकिल अब्बासी का सुलूक

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) मदीने ही में थे कि ज़िलहिज 222 हिजरी में अबू अल फ़ज़ल जाफ़र मुतावकिल अब्बासी तख़्ते ख़िलाफ़त पर मुतामकिकन होने के बाद इसने वह हरकतें शुरू कीं जिन्होंने ज़ारे दमिश्क़ यज़ीद को भी शर्मा दिया।

मुवर्रिख़ निगार में मुतावकिल अब्बासी को वही दर्जा हासिल है जो बनी उम्मया में यज़ीद को हासिल था। यह दोनों अपने ज़ाती किरदार के अलावा जो कुछ आले मौहम्मद स. के साथ करते रहे उससे तारीख़े इस्लाम सख़्त शर्मिन्दा है।

मुतावक्किल के मुताल्लिक मुवर्रिख इब्ने असीर लिखता है कि यह अली बिन अबी तालिब (अ.स.) और उनके अहले बैत से सख्त बुग़ज़ रखता था।

दमेरी का कहना है कि मोतावक्किल हज़रत अली (अ.स.) से बुग़ज़ शदीद रखता था और उनकी मनक़सत किया करता था। तारीख अबुल फ़िदा में है कि मुतावक्किल ने शायर इब्ने सकीयत को इस जुर्म कि उसने मुतावक्किल के इस सवाल के जवाब में मेरे बेटे मोताज़ और मोइद बेहतर हैं या अली (अ.स.) के बेटे हसन (अ.स.) हुसैन (अ.स.) यह कहा था कि तेरे बेटों को मैं हसनैन के गुलाम क़म्बर के बराबर भी नहीं समझता। मोतावक्किल ने उनकी ज़बान गुद्दी से खिचवा ली थी, मोतावक्किल की जिन्दगी का एक बदतरीन और सियाह ज़माना आले मौहम्मद स. की क़ब्रों को मिसमार करना है। इसके आम हालात यह हैं कि यह बड़ा ज़ालिम दाएम उल ख़ुम्र और अय्याश बादशह था। इसकी चार हज़ार कनीज़ें थीं। इन सब से मुजामेअत कर चुका था। इसके दरबार में हज़ल और मसख़्रा पन बहुत होता था, जो तमसखुर में बढ़ कर होता वही इसका ज़्यादा क़रीब होता था। वह महफिले बज़म में मुसाहेबों और नदीमों के साथ तकलीफ़ और ख़ुश तबड़ियां करता था, कभी मजलिस में शेर को छुड़ा देता था, कभी किसी की आस्तीन में सांप छोड़ देता था, जब वह काटता तो तरयाक़ से मदावा करता कभी मटकों में बिच्छू भरवा कर उन्हें मजलिस में तुड़वा देता था, वह मजलिस में फैल जाते किसी को हरकत करने का यारा न होता। उसने एक फ़रमान की रू से

मज़हब मोताज़िला को खिलाफ़े हुक्मत करार दिया था। मोताज़िलियों को सरकारी ओहदों से माज़ूल कर दिया था। अली (अ.स.) और औलादे अली (अ.स.) से दुश्मनी रखता था।

स्यूती लिखता है कि मुतावक्किल नासबी था। अली (अ.स.) और औलादे नबी स. का दुश्मन था। साहबे गुलज़ार शाही लिखते हैं कि इसके वक़्त में सादात बेचारे मुसीबत के मारे जिला वतन हो गये। करबला के रौज़े जो उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बनवाये थे और उन रोज़ों के गिर्द के मकानात उसने मिसमार करवा दिये और लोगों को जियारत से मना किया। साहबे हबीब अस सियर लिखते हैं कि 236 हिजरी में मुतावक्किल ने हुक्म दिया कि कोई मज़ारे हैदरे करार और उनकी औलाद की ज़ियारत को न जाया करें और हुक्म दिया कि इमाम हुसैन (अ.स.) और शोहदाए करबला के रौज़े को हमवार कर के उन पर ज़राअत के लिये पानी छोड़ दें और तारीख़ गुज़ीदा और तारीख़े कामिल में है कि मुतावक्किल ने हुक्म दिया कि इमाम हुसैन (अ.स.) के मज़ार और उसके गिर्द के मकानात वगैरह मुन्हदिम कर के वहां ज़राअत की जाए और लोगों को उस मक़ाम तक जाने की मुमानीयत कर के यह मुनादी करा दी कि जो शख्स वहां दिखाई देगा वह कैद किया जायेगा। तवारीख़ में है कि हर चन्द फ़रमा बरों ने कोशिश की मगर पानी इमाम और तमाम शोहदा ए इतरते ताहेरा की क़ब्रों पर जारी न हुआ जिस से खिलक़त को सख़्त हैरत हुई और उस वक़्त से और इसी सबब से उस मशहदे मुक़द्दस को

हायर कहने लगे। मुतावक्किल की इस हरकत से मुसलमानों को सख्त सदमा हुआ। अहले बगदाद ने मस्जिदों और घरों की दिवारों पर उसे गालियां लिखी और हुजूमें अशआर कहे। इस बनी फ़ातेमा से बागे फ़िदक भी छीन लिया था। गैर मुस्लिमों को ओहदों से बरतरफ़ कर दिया था। नसारा को हुक्म दिया कि गले में जिन्नार न बांधें, घोड़े पर सवार न हों, बल्कि गधे और खच्चर पर सवार हों और रक्बाबे काठ की रखें। 234 हिजरी में उसने तमाम मोहद्देसीन को सामरा में जमा किया और इनाम व इकराम दे कर हुक्म दिया कि सिफ़ात व रोयत व खल्के कुरआन के मुताअल्लिक हदीसे बयान करें। चुनाचे इसी लिये अबू बर्क इब्ने शीबा को जामा मस्जिद रसाफ़ा में और उनके भाई उसमान को जामा मन्सूर में मुकर्रर किया। इन दोनों के वाज़ में हर रोज़ करीब हज़ार आदमी जमा होते थे। सियूती लिखता है कि मोतावक्किल वह पहला खलीफ़ा है जिसने शाफ़ेई मज़हब इख़्तेयार किया। मोतावक्किल के ज़माने में बड़ी बड़ी आफ़तें नाज़िल हुईं। बहुत से इलाकों में ज़लज़ले आए, ज़मीनें दस गईं, आग लगीं, आसमान से हौलनाक अवाज़ें सुनाई दीं। बादे समूम से बहुत से आदमी और जानवर हलाक हुए। आसमान से मिसले टिडडियों के तारे टूटे। दस दस रतल के पत्थर आसमान से बरसे।

(तारीख़े इस्लाम जिल्द 1 सफ़ा 65)

मकामे ज़खार मे है कि मुतावक्किल चुंकि हज़रत अली (अ.स.) से दुश्मनी रखता था इसका मुस्तकिल रवय्या यह था कि वह ऐसे लोगों को अपने पास रखता था जो अमीरूल मोमिनीन से बुग़ज़ व अनाद रखते थे और उनकी तौहीन में बसर्त महसूस करते थे। जैसे इब्ने जहम शायर, उमर बिन फर्जरहजी अबू अलहज़ इब्ने अतरजा, अबू अल अबर यह लोग मोतावक्किल को हमेशा औलादे अली के कत्ल की तरफ़ मोतावज्जा करते थे और इससे कहते थे कि अगर तूने उन्हें बाक़ी रहने दिया तो यह एक न एक दिन तेरी सलतनत पर कब्ज़ा कर लेंगे। इन लोगों के हर वक़्त उभारने का नतीजा यह हुआ कि दिल में आले मौहम्मद स. की दुश्मनी पूरी तरह काएम हो गई। वह चुंकि गाने वाली औरतों का शायक़ था लेहाज़ा उसने शराब पीने के बाद एक ऐसी औरत को तलब किया जिससे वह बहुत ज़्यादा मानूस था। लोगों ने कहा कि दूसरी औरतें हाजिर हैं इनसे काम निकाला जाए वह आ जाएगी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। जब वह थोड़ी देर बाद पहुंची तो बादशाह ने पूछा कि कहां गई थीं? उसने कहा मैं हज करने गई थी। मोतावक्किल ने कहा माहे शाबान में कौन हज करता है। सच बता? इसने जवाब दिया: इमाम हुसैन (अ.स.) की जियारत के लिये चन्द औरतों के हमराह चली गई थी। यह सुन कर मोतावक्किल बहुत ग़ज़ब नाक हुआ और उसे कैद करा दिया। इसका तमाम माल असबाब ज़ब्त कर लिया और लोगों को जियारते करबला से रोक दिया और तीन रोज़ के बाद मनादी कर दी कि जो शख़्स हुसैन (अ.स.) की ज़ियारत को

जायेगा कैद किया जायेगा और हर तरफ़ एक एक मील के फ़ासले से पहरे बिठा दिये कि जो शख्स ज़्यारत को जाता हुआ पाया जाए फ़ौरन कैद में भैज दिया जाए। फिर एक नौ मुस्लिम यहूदी जिसका नाम वैरिज था को हुक्म दिया कि करबला जा कर हुसैन (अ.स.) की क़ब्र का निशान मिटा दे और उस जगह को जुतवा कर वहां खेत बनवा दे और ज़रीह को किसी तरह फिकवा दे। हुक्म पाते ही नौ मुस्लिम यहूदी जिसे इस्लाम और इस्लाम के बानीयों का सही ताअरूफ़ भी न था तामील के लिया रवाना हो गया और वहां पहुंच कर दो सौ जरीब ज़मीन उसने जुत्वा डाली। जब क़ब्रे मुनव्वरा इमाम हुसैन (अ.स.) को जोतने के लिये आगे बढ़ा तो मुसलमानों ने तामीले हुक्म से इनकार कर दिया और कहा कि यह फ़रज़न्दे रसूल स. हैं और शहीद हैं। कुरान मजीद इन्हें जिन्दा बताता है हम हरग़ि ऐसी नाजायज़ हरकत नहीं कर सकते। यह सुन कर विरज ने यहूदियों से मदद ली, मगर कामयाब न हुआ। उसके बाद नहर काट कर क़ब्रे मुनव्वरा को ज़ेरे आब करना चाहा। पानी नहर में चल कर जब क़ब्र के करीब पहुंचा तो उस पर रवां न हुआ बल्कि इसके इर्द गिर्द जारी हो गया। क़ब्रे मुबराक खुशक ही रही। इस यहूदी ने बड़ी कोशिश की, लेकिन कामयाबी हासिल न कर सका। वह ज़मीन जहां तक पानी फैला हुआ था उसे हाएर कहते हैं। किताबे तस्वीरे अज़ा में ब हवाले किताब सराएर मरकूम है इस ज़मीन को हाएर इस सबब से कहते हैं कि लुगते अरब में

हाएर के मानी ज़मीन पस्त के हैं। इस जगह बहता हुआ पानी पहुंच कर साकिन और हैरान हो जाता है क्योंकि बहने का रास्ता नहीं पाता।

शैख शहीद अलैहा रहमता का कहना है कि ज़माना ए मोतावक्किल में चुकि आपकी क़ब्र के निशान को मिटाने के लिये पानी जारी किया गया था और वहां पहुंच कर ब एजाज़े हुसैनी हैरान रह गया था और उस पर जारी नहीं हो सका इस लिये इस मुक़ाम को जिसमें पानी ठहरा हुआ था हाएर कहते हैं। स्यूती तारीख अल खुलफ़ा में लिखता है कि यह वाक़िया इन्हेदामे क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) 236 हिजरी का है उसने हुक्म दिया था कि इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र ढा दी जाए और निशाने क़ब्र मिटा दिया जाए और उनके मज़ार के इर्द गिर्द जितने मकानात हैं उन्हें भी मिस्मार कर के उस मुक़ाम को एक सहारा की शकल दे दी जाए और वहां पर खेती की जाए और लागों को ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) से क़तअन रोक दिया। इसके बाद स्यूती लिखता है मुतावक्किल बड़ा नासबी था उसके इस फ़ेल से मुसलमानों में सख़्त हैजान पैदा हो गया और लागों ने उसकी हजो की और दीवारों पर इसके लिये गालियां लिखीं यही कुछ किताब हबीब उस सियर तारीखे इस्लाम, तारीखे कामिल, जिलाउल उयून, कुम काम ज़खारे, अमाली शैख तूसी वगैरा में है।

अल्लामा स्यूती लिखते हैं कि इस मौक़े पर जिन बहुत से शायरो ने अशआर लिखे उनमे से एक शायर ने कई शेर कहे हैं जिनका तरजुमा यह है।

1. खुदा की कसम बनी उमय्या ने अपने नबी के नवासे को करबला में भूखा और प्यासा जुल्मो जौर के साथ क़त्ल कर दिया।

2. तो बनी अब्बास जो रसूल के चचा की औलाद हैं उन्होंने भी उन पर जुल्म में कमी नही की और उनकी क़ब्र खुदवा कर उसी किस्म के जुल्म का इरतेकाब किया है।

3. बनी अब्बास को इस किस्म का सदमा था कि वह क़त्ले हुसैन (अ.स.) में शरीक न हो सके तो उन्होंने इस सदमें की आग को बुझाने के लिये हज़रत की हड्डियों पर धावा बोल दिया।

(तारीख़ अल खुलफ़ा सफ़ा 237)

अमाली शैख़ तूसी में है कि मुतावक्किल का फिरस्तादा वह जब जियारत से मना करने के लिये करबला पहुंचा तो वहां के लोगों ने ज़ियारत न करने से साफ़ इन्कार कर दिया और कहा कि अगर मोतावक्किल सब को क़त्ल कर दे तब ही यह सिलसिला बन्द हो सकता है। उसने वापस जाकर मुतावक्किल से वाकिया बयान किया तो 247 हिजरी तक के लिये ख़ामोश हो गया।

तवारीख़ में है कि ख़लीफ़ा के हुक्म के मुताबिक़ अमीरे फ़ौज ने करबला वालों को ज़ियारते इमाम हुसैन (अ.स.) करने से रोकना चाहा तो उन लोगों ने फ़ौज से मरऊब होने के बजाए मुक़ाबले का प्रोग्राम बना लिया और अपनी जानों पर खेल कर अतराफ़ व जवानिब से दस हज़ार अफ़राद जमा कर लिये और सरकारी फ़ौज

के बिल मुक्राबिल आकर कहा कि अगर मुतावक्किल हम में से एक एक को क़त्ल कर डाले तब भी यह सिलसिला बन्द न होगा। हमारी औलादें हमारी नस्लें इस सुन्नते ज़्यारत को अदा करेगी। सुनों हमारे आबाओ अजदाद वही करते चले आए जो हम कर रहे हैं और हमारे अबनाये वाहेफ़ा वही करेंगे जो हम कर रहे हैं, बेहतर होगा कि तुम हमें बाज़ रखने की कोशिश न करो और मुतावक्किल से कह दो कि वह शराब के नशे में ऐसी हरकतें न करे और अपने फ़ैसले पर नज़र सानी कर के हुक़म वापस ले ले। अमीरे फ़ौज वापस गया और उसने सारी दास्तान मुतावक्किन के सामने दोहर दी। मुतावक्किल चूंकि उन दिनों सामरा की तमकील में मशगूल था। इसने मन्सूर दवानकी की तरह तक़रीबन दस साल ख़ामोश रहा। यानी मन्सूर दवानकी जो तामीरे बग़दाद की वजह से दस साल तक इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की तरफ़ मुतावज्जक न हो सका। मुतावक्किल भी सामरा की वजह से तक़रीबन इतनी ही मुद्दत के लिये ख़ामोश हो गया। इमाम शिबलन्जी लिखते हैं कि सामरा एक ज़बरदस्त शहर है जो दजला के मशरिक् मे तक़रीयत और बग़दाद के दरमियान वाक़े हैं इसकी बुनियाद 221 हि. में मोतासिम अब्बासी ने डाली थी और मुद्दतों इसकी तक़मील का सिलसिला जारी रहा।

(नुरूल अबसार सफ़ा 149 व तारीख़ किरमानी क़लमी)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) की मदीने से सामरा तलबी

हुकूमत की तरफ़ से इमाम अली नक़ी (अ.स.) की मदीने से सामरा में तलबी और रास्ते का अहम वाकिया

मोतावक्किल 232 हिजरी में खलीफ़ा हुआ और उसने 236 हिजरी में इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र के साथ पहली बार बेअदबी की लेकिन उसमें पूरी कामयाबी न हासिल होने पर अपने फ़ितरी बुग़ज़ की वजह से जो आले मौहम्मद स. के साथ था वह हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की तरफ़ मुतावज्जा हुआ। मुतावक्किल 243 हिजरी में इमाम नक़ी (अ.स.) को सताने की तरफ़ मुतावज्जे हुआ और इसने हाकिमे मदीना अब्दुल्ला बिन मौहम्मद को खुफिया हुकम दे कर भेजा कि फ़रज़न्दे रसूल इमाम अली नक़ी (अ.स.) को सताने में कोई दक़ीका फ़रो गुज़ाशत न करे। चुनान्चे इसने हुकूमत के मन्शा के मुताबिक़ पूरी तवज्जा और पूरे इन्हेमाक के साथ अपना काम शुरू कर दिया। खुद जिस क़दर सता सका उसने सताया और आपके ख़िलाफ़ रिकार्ड के लिये मोतावक्किल को शिकायत भेजनी शुरू की।

अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि इमाम अली नक़ी (अ.स.) को यह मालूम हो गया कि हाकिमे मदीना ने आपके ख़िलाफ़ रेशा दवानाइयां शुरू कर दी हैं और इस सिलसिले में इसने मोतावक्किल को आपकी शिकायत भेजनी शुरू कर दी हैं तो आपने भी एक तफ़सीली ख़त लिखा जिसमें हाकिमे मदीना की बे एतिदाली और जुल्म आफ़रीनी का ख़ास तौर से ज़िक्र किया। मोतावक्किल ने आपका ख़त पढ़

कर आपको इसके जवाब में लिखा के आप हमारे पास चले आएं। इसमें हाकिमें मदीना के अमल की माज़ेरत भी थी, यानी जो कुछ वह कर रहा है अच्छा नहीं करता, हम इसकी तरफ़ से माज़ेरत ख्वाह हैं मतलब यह था कि इसी बहाने से उन्हें सामरा बुला लें। ख़त मे उसने इतना नरम लहजा इख़तेयार किया था जो एक बादशाह की तरफ़ से नहीं हुआ करता, यह सब हीला साज़ी थी और गरज़ महज़ यह थी कि आप मदीना छोड़ कर सामरा पहुंच जायें।

(नूरुल अबसार सफ़ा 149)

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि मुतावक्किल ने यह भी लिखा था कि मैं आपकी ख़ातिर से अब्दुल्ला इब्ने मौहम्मद को माजूल कर के इसकी जगह पर मौहम्मद बिन फ़ज़ल को मुकर्रर कर रहा हूं।

(जिलाउल उयून सफ़ा 292)

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि मुतावक्किल ने सिर्फ़ यही नहीं किया कि अली नक़ी (अ.स.) को ख़त लिखा हो कि आप सामरा चले आइये बल्कि इसने तीन सौ का लश्कर यहिया इब्ने हरसमा की क़यादत में मदीना भेज कर उन्हें बुलाना चाहा यहिया इब्ने हरसमा का बयान है कि मैं हुक़मे मुतावक्किल पा कर इमाम (अ.स.) को लाने के लिये ब इरादा मदीना मुनक्वरा रवाना हो गया, मेरे हमराह तीन सौ का लश्कर था और इसमें एक कातिब भी था जो इमामिया मज़हब रखता था। हम

लोग अपने रास्ते पर जा रहे थे और इस कोशिश में थे कि किसी तरह जल्द से जल्द मदीना पहुंच कर इमाम (अ.स.) को ले आए और मुतावक्किल के सामने पेश करें। हमराह जो एक शिया कातिब था उससे एक लश्कर के अफसर से रास्ते भर मज़हबी मनाज़रा होता रहा। यहां तक कि हम लोग एक अज़ीमुशान वादी में पहुंचे, जिसके इर्द गिर्द मीलों कोई आबादी न थी और वह ऐसी जगह थी जहां से इन्सान का मुश्किल से गुज़र होता था बिल्कुल जंगल और खुशक सहारा था। जब हमारा लश्कर वहां पहुंचा तो उस अफसर ने जिसका नाम शादी था और जो कातिब से मनाज़रा करता चला आ रहा था। कहने लगा ऐ कातिब तुम्हारे इमाम हज़रत अली (अ.स.) का यह क़ौल है कि दुनिया की कोई ऐसी वादी न होगी जिसमें क़ब्र न हो या अनक़रीब क़ब्र न बन जाए। कातिब ने कहा बेशक हमारे इमाम (अ.स.) ग़ालिब कुल्ले ग़ालिब का यही इरशाद है। इसने कहा: बताओ इस ज़मीन पर किस की क़ब्र है? या किस की क़ब्र बन सकती है। तुम्हारे इमाम यूं ही की दिया करते हैं। इब्ने हरसमा का कहना है कि मैं चूंकि हशवी ख़्याल का था लेहाज़ा जब यह बातें हमने सुनीं तो हम सब हंस पड़े और कातिब शर्मिन्दा हो गया। गरज़ कि लश्कर बढ़ता रहा और उसी दिन मदीना पहुंच गया। वारिदे मदीना होने के बाद मैंने मुतावक्किल का ख़त इमाम अली नक़ी (अ.स.) की ख़िदमत में पेश किया। इमाम (अ.स.) उसे मुलाहेज़ा फ़रमा कर लश्कर पर नज़र डाली और समझ गये कि दाल में कुछ काला है। आपने फ़रमाया ऐ इब्ने हरसमा चलने को तैय्यार हूं लेकिन

एक दो रोज़ की मोहलस ज़रूरी है। मैंने अर्ज़ कि हुज़ूर खुशी से जब हुक्म हो फ़रमायें मैं हाज़िर हो जाऊं और रवानगी हो जाए। इब्ने हरसमा का बयान है कि इमाम (अ.स.) ने मेरे सामने मुलाज़ेमीन को से कहा कि दरज़ी को बुला दो और उससे कहो कि मुझे सामरा जाना है लेहाज़ा रास्ते के लिये गर्म कपड़े टोपियां जल्दी से तैय्यार कर दे। मैं वहां से रूखसत हो कर अपने क़याम गाह पर पहुंचा और रास्ते भर यह सोचता रहा कि इमामीया कैसे बेवकूफ़ हैं कि एक शख्स को इमाम मानते हैं जिसे माज़ा अल्लाह यह तक तमीज़ नहीं है कि यह गर्मी का ज़माना है या जाड़े का। इतनी शदीद गर्मी में जाड़े के कपड़े सिलवा रहे हैं और उसे हमराह ले जाना चाहते हैं। अलगरज़ मैं दूसरे दिन इनकी खिदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि जाड़े के बहुत से कपड़े सिले हुए रखे हैं और आप सामाने सफ़र दुरूस्त फ़रमा रहे हैं और आप अपने मुलाज़ेमीन से कहते जाते हैं देखो कुलाह बारानी और बरसाती वगैरा रहने न पाए। सब साथ मे बांध दो। इसके बाद मुझे कहा ऐ याहिया इब्ने हरसमा जाओ तुम भी अपना सामान दुरूस्त करो ताकि मुनासिब वक़्त में रवांगी हो जाए। मैं वहां से निहायत बद दिल वापस आया। दिल में सोचता था कि उन्हें क्या हो गया कि इस शदीद गर्मी के ज़माने में सर्दी और बरसात का सामान हमराह ले रहे हैं और मुझे भी हुक्म देते हैं कि तुम भी इस किस्म के सामान हमराह ले लो। मुख्तसर यह कि सामाने सफ़र दुरूस्त हो गया और रवानगी हो गई। मेरा लश्कर इमाम (अ.स.) को घेरे में लिए हुए जा रहा था

कि नागाह इसी वादी में जा पहुंचे, जिसके मुतअल्लिक कातिब इमामिया और अफसर शाही में यह गुफतगू हुई थी कि यहां पर किसकी कब्र है या होगी। इस वादी में पहुंचना था कि कयामत आ गई, बादल गरजने लगे, बिजली चमकने लगी और दोपहर के वक़्त इस क़दर तारीकी छाई कि एक दूसरे को देख न सकता था, यहां तक कि बारिश शुरू हुई और ऐसी मुसलाधार बारिश हुई कि उमर भर न देखी थी इमाम (अ.स.) ने आसार के पैदा होते ही मुलाज़मीन को हुक़म दिया कि बरसाती और बारानी टोपीयां पहन लो और एक बरसाती याहिया इब्ने हरसमा और एक कातिब को दे दो। गरज़ कि खूब बारिश हुई हवा इतनी ठन्डी चली कि जान के लाले पड़ गए। जब बारिश थमी और और बादल छटे तो मैंने देखा कि अस्सी अफ़राद मेरी फ़ौज के हलाक हो गए हैं। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया कि ऐ याहिया इब्ने हरसमा अपने मुर्दों को दफ़न करो और यह जान लो कि खुदाए ताला हम चुनी पुरमी गिरवान्द बक्रा राज़ेक़बूर इस तरह खुदा वन्दे आलम हर बुक़्काए अर्ज़ को क़ब्रों से पुर करता है, इसी लिए मेरे जद नामदार हज़रत अली (अ.स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि ज़मीन का काई टुकड़ा ऐसा न होगा जिसमें कब्र न बनी हो। “यह सुन कर मैं अपने घोड़े से उतर पड़ा और इमाम (अ.स.) के करीब जा कर पा बोस हुआ और उनकी खिदमत मे अर्ज़ की मौला मैं आज आपके सामने मुसलमान होता हूँ यह कह कर मैंने इस तरह कलमा पढ़ा अशअदो अन ला इलाहा इल्ल्लाह व अशअदो अन मौहम्मद अबदहू व इनकुम खुलाफ़ा अला फ़ीअर हैना ”

और यकीन कर लिया कि यही हज़रत खुदा की ज़मीन पर खलीफ़ा हैं और दिल में सोचने लगा कि अगर इमाम (अ.स.) ने जाड़े और बरसात का सामान न लिया होता और अगर मुझे न दिया होता तो मेरा क्या हशर होता। फिर वहां से रवाना हो कर अस्कर पहुंचा और आपकी इमामत का काएल रह कर जिन्दा रहा और ताहयात आपके जद्दे नामदार का कलमा पढ़ता रहा।

(कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा 124)

अल्लामा जामी और अल्लामा शिब्लन्जी लिखते हैं कि दो सौ से ज़ाएद अफ़राद आपको अपने घरे में लिये हुए सामरा पहुंचे। वहां आपके क़याम का कोई इन्तेज़ाम नहीं किया गया था और हुक़म था कि मुतावक्किल का कि इन्हें फ़कीरो के ठहराने की जगह उतारा जाए चुनान्चे आपको खनुल सालेआ में उतारा गया वह जगह बदतरीन थी वहां शुरफ़ा नही जाया करते थे। एक दिन सालेहा बिन सईद नामी एक शख़ जो आपके मानने वाले थे आपकी खिदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे मौला यह लोग आपकी क़दरो मन्जिलत पर पर्दा डाल रहे हैं और नूरे खुदा को छुपाने की किस क़दर कोशिश करते हैं कहा हुज़ूर की ज़ाते अक़दस और कहा यह क़याम गाह। हज़रत ने फ़रमाया: ऐ सालेह तुम दिल तंग न हो मैं उसकी इज़ज़त अफ़ज़ाई का ख़वाहां और उनकी करम गुस्तरी का जोया हूं, खुदा वन्दे आलम ने आले मौहम्मद स. को जो दर्जा दिया है और जो मुक़ाम अता फ़रमाया है उसे कोई

छीन नहीं सकता। ऐ सालेह बिन सईद में तुम्हे खुश करने के लिये बताना चाहता हूं कि तुम मुझे इस मुक़ाम पर देख कर परेशान न हो खुदा वन्दे आलम ने यहां भी मेरे लिये बेहिश्त जैसा बन्दो बस्त फ़रमाया है यह कह कर आपने उंगली से इशारा किया और सालेह की नज़र में बेहतरीन बाग़ बेहतरीन नहर वगैरह नज़र आने लगीं। सालेह का बयान है कि यह देख कर मुझे क़दरे तसल्ली हो गई।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा 208, नूरूल अबसार सफ़ा 150)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) की नज़र बन्दी

इमाम अली नक़ी (अ.स.) को धोके से बुलाने के बाद पहले तो खान अल सआलेक में फिर इसके बाद एक दूसरे मक़ाम में आपको नज़र बन्द कर दिया और ताहयात इसी में कैद रखा। इमाम शिब्लन्जी लिखते हैं कि मुतावक्किल आपके साथ ज़ाहिर दारी ज़रूर करता था, लेकिन आपका सख्त दुश्मन था। उसने हीला साज़ी और धोका बाज़ी से आपको बुलाया और दरपर्दा सताने और तबाह करने और मुसीबतों में मुबतिला करने की कोशिश करता रहा।

(नूरूल अबसार सफ़ा 150)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि मुतावक्किल ने आपको जबरन बुला कर सामरा मे नज़र बन्द कर दिया और ता जिन्दगी बाहर न निकलने दिया।

(सवाएके मोहर्रैका सफ़ा 124)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) का जज़बा ए हमदर्दी

मदीने से सामरा पहुंचने के बाद भी आपको पास लागों की आमद का तांता बंधा रहा। लोग आपसे फ़ायदे उठाते और दीनी और दुनियावी उमूर में आपसे मदद चाहते रहे और आप हल्ले मुश्किल में उनके काम आते रहे। उलमाए इस्लाम लिखते हैं कि सामरा पहुंचने के बाद जब आपकी नज़र बन्दी मे सख्ती और शिद्दत न थी, एक दिन आप सामरा के एक करये में तशरीफ़ ले गये। आपके

जाने के बाद एक साएल आपके मकान पर आया, उसे यह मालूम हुआ कि आप फ़लां गांव में तशरीफ़ ले गए हैं, वह वहां चला गया और जाकर आपसे मिला। आपने पूछा कि तुम कैसे आए हो। तुम्हारा क्या काम है? उसने अर्ज़ कि मौला ग़रीब आदमी हूं। मुझ पर दस हज़ार दिरहम कर्ज़ हो गया है और इसकी अदाएगी की कोई सबील नहीं। मौला खुदा के लिये मुझे इस बला से निजात दिलाईये। हज़रत ने फ़रमाया घबराओ नहीं। इन्शाअल्लाह तुम्हारे कर्ज़ की अदाएगी का बन्दो बस्त हो जाएगा। वह साएल रात को आपके हमराह मुक़ीम रहा, सुबह के वक़्त आपने इस से कहा कि मैं तुम्हे जो कहूं उसकी तामील करना और देखो इस अमर में ज़रा भी मुखलेफ़त न करना, उसने तामीले इरशाद का वादा किया। आपने उसे एक ख़त लिख कर दिया जिसमें यह मरकूम था कि “ मैं दस हज़ार दिरहम इसके अदा कर दूंगा और फ़रमाया कि कल मैं सामरा पहुंच जाऊंगा जिस वक़्त मैं वहां के बड़े बड़े लोगो के दरमियान बैठा हूं तो तुम मुझसे रूपयां का तक्राज़ा करना उसने अर्ज़ कि हुज़ूर यह क्यों कर हो सकता है कि मैं लोगो में आपकी तौहीन करूं। हज़रत ने फ़रमाया कोई हर्ज नहीं मैं तुमसे जो कहूं वह करो। गरज़ कि साएल चला गया और जब आप सामरा वापस हुए और लोगो को आपकी वापसी की इत्तेला मिली तो आयाने शहर आपसे मिलने आए। जिस वक़्त आप लोगो से महवे मुलाक़ात थे साएल मज़कूर भी पहुंच गया साएल ने हिदायत के मुताबिक़ आपसे रक़म का तक्राज़ा किया। आपने बहुत नरमी से उसे टालने की कोशिश की,

लेकिन वह न टला और ब दस्तूर रक़म मांगता रहा। बिल आखिर हज़रत ने उसे तीन दिन में अदाएगी का वादा फ़रमाया और वह चला गया। यह ख़बर जब बादशाहे वक़्त को पहुंची तो उसने मुबलिग़ तीस हज़ार दिरहम आपकी ख़िदमत में भेज दिये तीसरे दिन जब साएल आया तो आपने उससे फ़रमाया कि यह तीस हज़ार दिरहम ल ले और अपनी राह लग। उसने अर्ज़ कि मौला मेरा क़र्ज़ तो सिर्फ़ दस हज़ार है आप तीस हज़ार दे रहे हैं। आपने फ़रमाया जो क़र्ज़ की अदाएगी से बचे उसे अपने बच्चों पर सर्फ़ करना। वह बहुत ख़ुश हुआ और यह पढ़ता हुआ कि खुदा ही ख़ूब जानता है कि रिसालत व अमानत का कोई अहल है। अपने घर चला गया।

(नूरूल अबसार सफ़ा 149, सवाएके मोहर्रका सफ़ा 123, शवाहेदुन नबूवत सफ़ा 207 अरजहुल मतालिब सफ़ा 461)

इमाम अली नक़ी (अ.स.) की हालत सामरा पहुंचने के बाद

मुतावक्किल की नीयत ख़राब थी ही इमाम अली (अ.स.) के सामराह पहुंचने के बाद उसने अपनी नीयत का मुज़ाहरा अमल से शुरु किया और आपके साथ न मुनासिब तरीक़ों से दिल का बुखार निकालने की तरफ़ मुतावज्जा हुआ लेकिन अल्लाह जिसकी लाठी में आवाज़ नहीं उसने उसे कैफ़रे किरदार तक पहुंचा दिया

मगर इसकी जिन्दगी में भी ऐसे असार और असरात जाहिर किए जिससे वह भी जान ले कि वह जो कुछ कर रहा था खुदावन्द उसे पसन्द नहीं करता।

मुवरिख अजीम लिखते हैं कि मुतावक्किल के ज़माने में बड़ी आफ़तें नाजिल हुईं बहुत से इलाकों में ज़लज़ले आए, ज़मीने धस गईं, आगें लगीं, आसमान से हौलनांक आवाज़ें सुनाई दीं। बादे समूम से बहुत से जानवर और आदमी हलाक हुए। आसमान से मिस्ल टिड्डी के कसरत से सितारे टूटे, दस दस रसल के पत्थर आसमान से बरसे। रमज़ान 243 हिजरी में हलब से एक परिन्दा कौवे से बड़ा आकर बैठा और वह शोर मचाया “या अय्योहन नास इत्तकूल्लाह” चालीस दफ़ा यह आवाज़ लगा कर उड़ गया दो दिन ऐसा ही हुआ।

(तारीखे इस्लाम जिल्द 1 सफ़ा 65)

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और सवारी की तेज़रफ़्तारी

अल्लामा तबरसी लिखते हैं कि हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के मदीने से सामरा तशरीफ़ ले जाने के बाद एक दिन अबू हाशिम ने कहा: मौला मेरा दिल नहीं मानता कि मैं एक दिन भी आपकी जियारत से महरूम हूं, बल्कि जी चाहता है कि हर रोज़ आपकी खिदमत में हाज़िर हुआ करूं। हज़रत ने पूछा इसके लिए तुम्हें कौन सी रूकावट है? उन्होंने अर्ज़ की मेरा क़याम बग़दाद है और मेरी सवारी कमज़ोर है। हज़रत ने फ़रमाया: जाओ अब तुम्हारी सवारी का जानवर ताक़तवर हो

जाएगा और इसकी रफ़्तार बहुत तेज़ हो जाएगी। अबू हाशिम का बयान है कि हज़रत के इस इरशाद के बाद से ऐसा हो गया कि मैं रोज़ाना नमाज़े सुब्ह व नमाज़े जोहर सामरा के असकर महल्ले में और नमाज़े मगरिब इशा बग़दाद में पढ़ने लगा।

(आलामुलवुरा सफ़ा 208)

दो माह पहले पहले काज़ी की मौत की ख़बर

अल्लामा जामी रहमतुर अल्लाह तहरीर फ़रमाते हैं कि आप से एक मानने वाले ने अपनी तकलीफ़ बयान करते हुए बग़दाद के काज़ी शहर की शिकायत की और कहा कि मौला वह बड़ा ज़ालिम है हम लोगों को बेहद सताता है आपने फ़रमाया घबराओ नहीं वह दो माह बाद बग़दाद में न रहेगा। रावी का बयान है कि ज्योंही दो माद पूरे हुए काज़ी अपने मनसब से माज़ूल हो कर अपने घर बैठ गया। (शवाहेदुन नबूवा)

आपका एहतिराम जानवरों की नज़र में

अल्लामा मौसूफ़ यह भी लिखते हैं कि मुतावक्किल के मकान में बहुत सी बतखे पली हुई थीं जब कोई वहां जाता तो वह इतना शोर मचाया करती थीं कि कान पड़े

बात सुनाई न देती थी लेकिन जब इमाम (अ.स.) तशरीफ ले जाते थे तो वह सब खामोश हो जाती थीं और जब तक आप वहां तशरीफ रखते थे, वह चुप रहती थीं।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा 209)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) और ख़्वाब की अमली ताबीर

अहमद बिन ईसा अल कातिब का बयान है कि मैंने एक शब ख़्वाब में देखा कि हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा स. तशरीफ़ फ़रमा हैं और मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हूँ। हज़रत ने मेरी तरफ़ नज़र उठा कर देखा और अपने दस्ते मुबारक से एक मुठ्ठी ख़ुरमा इस तशत से अता फ़रमाया जो आपके सामने रखा हुआ था। मैंने उन्हें गिना तो वह पच्चीस थे। इस ख़्वाब को अभी ज़्यादा दिन न गुज़रे थे कि मुझे मालूम हुआ कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) सामरा तशरीफ़ लाए हैं। मैं उनकी ज़यारत के लिए हाज़िर हुआ तो मैंने देखा कि उनके सामने एक तशत रखा है जिसमें ख़ुरमों हैं। मैंने हज़रत को सलाम किया। हज़रत ने जवाबे सलाम देने के बाद एक मुठ्ठी ख़ुरमा मुझे अता फ़रमाया, मैंने इन ख़ुरमों का शुमार किया तो वह भी पच्चीस थे। मैंने अर्ज़ की मौला क्या कुछ ख़ुरमा और मिल सकता है? जवाब में फ़रमाया ! अगर ख़्वाब में तुम्हें रसूले खुदा स. ने इससे ज़्यादा दिया होता तो मैं भी इज़ाफ़ा कर देता। दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 124 इसी किस्म का

वाकिया इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) और इमाम अली रज़ा (अ.स.) के लिए भी गुज़रा है।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) और फ़ुक्रहाए मुस्लेमीन

यह तो मानी हुई बात है कि आले मौहम्मद स. ही वह है जिनके घर में कुरान मजीद नाजिल हुआ। इन से बेहतर न कुरान समझने वाला है और न उसकी तफ़सीर जानने वाला है। उलमा का बयान है कि जब मोतावक्किल को ज़हर दिया गया तो उसने यह नज़र मानी कि अगर मैं अच्छा हो गया तो राहे खुदा में माले कसीर दूंगा। फिर सेहत पाने के बाद उसने अपने उल्माए इस्लाम को जमा किया और इनसे वाकिया बयान कर के माले कसीर की तफ़सीर मालूम करना चाही। इसके जवाब में हर एक ने अलाहेदा अलाहेदा बयान दिया एक फ़कीहे ने कहा माले कसीर से एक हज़ार दिरहम दूसरे फ़कीह ने दस हज़ार दिरहम, तीसरे ने कहा एक लाख दिरहम मुराद लेना चाहिए। मोतावक्किल ने जब हर फ़कीह से अलाहेदा जवाब सुना तो तशवीश में पड़ गया और ग़ौर करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। मुतावक्किल अभी सोच ही रहा था कि एक दरबान सामने आया जिसका नाम हसन था और अर्ज़ करने लगा कि हुज़ूर अगर मुझे हुक्म हो तो मैं इसका सही जवाब ला दूँ। मुतावक्किल ने कहा बेहतर है जवाब लाओ अगर तुम सही जवाब लाए तो दस हज़ार दिरहम तुमको इनाम दूंगा और अगर तसल्ली बख़श

जवाब न ला सके तो सौ कोड़े मारूंगा। इसने कहा मुझे मन्ज़ूर हैं। इसके बाद दरबान हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की खिदमत में गया। इमाम (अ.स.) जो नज़र बन्द जिन्दगी बसर कर रहे थे दरबान को देख कर बोले अच्छा अच्छा माले कसीर की तफ़सीर पूछने आया है जा और मुतावक्किल से कह दे माले कसीर अस्सी दिरहम मुराद हैं दरबान ने मुतावक्किल से यही कह दिया। मुतावक्किल ने कहा जा कर दलील मालूम कर। वह वापस आया हज़रत ने फ़रमाया कि कुरान मजीद में आं हज़रत स. के लिए आया है कि लक़द नसरकुमुलिल्लाह फ़ी मवातिन कसीरतह ऐ रसूल अल्लाह स. ! ने तुम्हारी मद मवातिन कसीरह यानी बहुत से मुक़ामात पर की है जब हमने इन मुक़ामात का शुमार किया जिनमें खुदा ने आपकी मदद फ़रमाई है तो वह हिसाब से अस्सी होते हैं। मालूम हुआ की लफ़ज़े कसीर का इतलाक़ अस्सी पर होता है। यह सुन कर मुतावक्किल खुश हो गया और उसने अस्सी दिरहम सदक़ा निकाल कर दस हज़ार दिरहम दरबान को इनाम दिया।

(मनाकिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द 5 सफ़ा 116)

इसी किस्म का एक वाक़िया है कि मुतावक्किल के दरबार में एक नसरानी पेश किया गया जो मुसलमान औरत से जिना करता हुआ पकड़ा गया। जब वह दरबार में आया तो कहने लगा मुझ पर हद जारी न किया जाए। मैं इस वक़्त मुसलमान होता हूँ। यह सुन कर काज़ी यहिया बिन अक़सम ने कहा कि इसे छोड़ देना

चाहिए क्योंकि यह मुसलमान हो गया है। एक फ़कीह ने कहा कि नहीं हद जारी होना चाहिए गरज़ कि फोक़हाए मुसलेमीन में इख़तेलाफ़ हो गया। मुतावक्किल ने जब यह देखा कि मसला हल होता नज़र नहीं आता तो हुक्म दिया कि इमाम अली नक़ी (अ.स.) को ख़त लिख कर इनसे जवाब मगाया जाए। चुनान्चे मसला लिखा गया। हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया यज़रब हत्त यमूता कि उसे इतने मारना चाहिए कि मर जाए। जब यह जवाब मुतावक्किल के दरबार में पहुंचाया तो यहिया इब्ने अकसम काज़ी शहर और फ़कीह सलतनत नीज़ दीगर फुक़हा ने कहा इसका कोई सबूत कुरान मजीद में नहीं है बराए मेहरबानी इसकी वज़ाहत फ़रमायें। आपने ख़त मुलाहेज़ा फ़रमा कर एक आयत तहरीर फ़रमाई जिसका तरजुमा यह है। जब काफ़िरों ने हमारी सख़्ती देखी तो कहा कि हम अल्लाह पर ईमान लाते हैं और अपने कुफ़्र से तौबा करते हैं यह उनका कहना उनके लिए मुफ़िद न हुआ और न ईमान लाना काम आया आयत पढ़ने के बाद मुतावक्किल ने तमाम फुक़हा के अक़वाल मुस्तरद कर दिए और नसरानी के लिए हुक्म दे दिया कि इस क़दर मारा जाए कि मर जाए।

(दमतुस साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 120)

शाहे रोम को हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) का जवाब

अल्लामा मौहम्मद बाकर नजफ़ी लिखते हैं कि बादशाहे रोम ने खलीफ़ाए वक़्त को लिखा कि मैंने इन्ज़ील में पढ़ा है कि जो शख्स इस सूरे की तिलावत करे जिसमें यह सात लफ़ज़ न हों 1. से 2. जीम 3. खे 4. ज़े 5. शीन 6. ज़ो 7. फ़े। वह जन्नत में जाएगा। इसे देखने के बाद मैंने तौरैत ज़बूर का अच्छी तरह मुतालेआ किया लेकिन इस किस्म का कोई सूरा इसमें नहीं मिला। आप ज़रा अपने उलमा से तहकीक़ कर के लिखये कि शायद यह बात आपके कुरान मजीद में हो। बादशाहे वक़्त ने बहुत से उलमा जमा किये और उनके सामने यह चीज़ पेश की सबने बहुत देर तक गौर किया लेकिन कोई इस नतीजे पर न पहुंच सका कि तसल्ली बख़्श जवाब दे सके। जब खलीफ़ा ए वक़्त तमाम उलमा से मायूस हो गया तो इमाम अली नकी (अ.स.) की तरफ़ तवज्जा की। जब आप दरबार में तशरीफ़ लाए और आपके सामने मसला लाया गया तो आपने बिला ताख़ीर कहा, वह सूरा ए हम्द है। अब जो गौर किया गया तो बिल्कुल ठीक पाया गया। बादशाहे इस्लाम खलीफ़ा ए वक़्त ने अर्ज़ कि, यब्ना रसूल अल्लाह स. क्या अच्छा होता अगर आप इसकी वजह भी बताएँ कि यह हरूफ़ इस सूरा में क्योँ नहीं लाए गये। आपने फ़रमाया यह सूरा रहमत व बरकत का है इसमें यह हरूफ़ इस लिए नहीं लाए गए कि से सबूर हलाकत तबाही, बरबादी की तरफ़, जीम से जेहीम जहन्नम की तरफ़ खे ख़ैबत यानी ख़ुसरान की तरफ़ ज़े से ज़कूम यानी थोहड़ की

तरफ़ शीन से शक्रावत की तरफ़ जो जुलमत की तरफ़ फ़े फ़ुरक़त की तरफ़ तबादरे ज़ेहनी होता है और यह तमाम चीज़ें रहमत व बरक़त के मुनाफ़ी हैं। ख़लीफ़ा ए वक़्त ने आपका तफ़्सीली बयान शाहे रोम को भेज दिया। बादशाहे रोम ने ज्यांही उसे पढ़ा मसरूर हो गया और उसी वक़्त इस्लाम लाया और ता हयात मुसलमान रह।

(दमतुस साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 140 ब हवाला शरा शाफ़या अबू फ़रास)

मुतावक्किल के कहने से इब्ने सकीत व इब्ने अकसम का इमाम अली नक़ी (अ.स.) से सवाल

उलमा का बयान है कि एक दिन मुतावक्किल अपने दरबार में बैठा हुआ था दीगर कामों से फ़रागत के बाद इब्ने सकीत की तरफ़ मुतावज्जा हो कर बोला अबुल हसन से ज़रा सख़्त सख़्त सवाल करो, इब्ने सकीन ने काबलीयत भर सवाल किए। इमाम (अ.स.) ने तमाम सवालात के मुफ़स्सल और मुकम्मल जवाब दिए। यह देख कर यहिया इब्ने अक़सम काज़ी सलतनत ने कहा ऐ इब्ने सकीत तुम नहो शेर, लुग़द के आलिम हो, तुम्हें मनाज़रे से क्या दिलचस्पी, ठहरो मैं सवाल करता हूं। यह कह कर उसने एक सवाल नामा निकाला जो पहले से लिख कर अपने हमराह रखे हुए था और हज़रत को दे दिया। हज़रत ने इसका इसी वक़्त जवाब लिखना शुरू कर दिया कि काज़ी शहर को मुतावक्किल से कहना पड़ा कि

इन जवाबात को पोशीदा रखा जाए वरना शीयां की हौसला अफ़ज़ाई होगी। इन सवालात में एक सवाल यह भी था कि कुरान मजीद में सबता अलबहर और मानफ़दत कलमात अल्लाह जो हैं इसमें किन सात दरियाओं की तरफ़ इशारा है और कलमात अल्लाह से क्या मुराद है। आपने इसके जवाब में तहरीर फ़रमाया कि सात दरिया यह हैं 1 ऐन अलकिबरीयत 2 ऐन अलमैन 3 ऐन अलबरहूत 4 ऐन अलबतरया 5 ऐन अलसैदान 6 ऐन अल फ़रीक 7 ऐन अल याहुरान यह कलमात से हम मौहम्मद स. व आले मौहम्मद (अ.स.) मुराद हैं जिनके फ़ज़एल का एहसा न मुम्किन है।

(मनाकिब जिल्द 5 सफ़ा 117)

क़ज़ा व क़दर के मुताअल्लिक़ इमाम अली नक़ी (अ.स.) की रहबरी व रहनुमाई

क़ज़ा व क़दर के बारे में तक़रीबन तमाम फिरके जादए ऐतिदाल से हटे हुए हैं इसकी वज़ाहत में कोई ज़ब्र का काएल नज़र नहीं आता है कोई मुतलक़न तफ़वीज़ पर ईमान रखता हुआ दिखाई देता है। हमारे इमाम अली नक़ी (अ.स.) अपने आबाओ अजदाद की तरह क़ज़ाओ क़दर की वज़ाहत इन लफ़्ज़ों में फ़रमाई है: न इन्सान बिल्कुल मजबूर है न बिल्कुल आज़ाद है बल्कि दोनो हालातों के दरमियान है।

(दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 134)

में हज़रत का मतलब यह समझता हूँ कि इन्सान असबाब व आमाल में बिल्कुल आज़ाद है और नतीजे की बरामदगी में खुदा का मोहताज है।

उलमाए इमामिया की जिम्मेदारियों के मुतालिक हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) का इरशाद है

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) ने इरशाद फ़रमाया है कि हमारे उलमा ग़ैबते काएम आले मौहम्मद स. के ज़माने में मुहाफ़िज़े दीन और रहबरे इल्म व यकीन होंगे। इनकी मिसाल शियों के लिये बिल्कुल वैसी ही होगी जैसी कश्ती के लिए न खुदा की होती है। वह हमारे ज़ईफ़ों को तसल्ली देंगे। वह अफ़जल उन नास और काएदे मिल्लत होंगे।

(दमतुस् साकेबा जिल्द 2 सफ़ा 137)

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की खाना तलाशी

मुवरेखीन का बयान है कि 243 हिजरी में हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) सामरा पहुंच कर नज़र बन्द हो गए, लेकिन आपने इस हालत में भी फ़रीज़ाए इमामत अदा करने में ज़रा भी पसो पेश नहीं फ़रमाया और फ़रीज़ाए मन्सबी तबलीगे दीने इस्लाम बराबर फ़रमाते रहे चूंकि आप फ़रज़न्दे रसूल स. और आलिमें अहले ज़माना थे इस लिए आपका विकार लोगों की निगाहों में रोज़ बरोज़

बढ़ता गया। आप लोगों को उसूले इस्लाम और इबादत की तालीम फ़रमाया करते थे और खुद भी शबो रोज़ इबादत गुज़ारी में मशगूल रहा करते थे। आप यह तहय्या किए हुए थे कि उमूरे सलतनत में कोई दखल किसी तरह से न देंगे और अपने को हर वक़्त मशगूले हक़ रखेंगे और यही कुछ रहे लेकिन दुनिया वाले कब किसी अल्लाह वाले को चैन लेने देते हैं। वह लोग यह भी बर्दाशत न कर सके कि इमाम इज़ज़त व विक़ार और सुकून व इतमिनाने ज़ाहेरी की जिन्दगी बसर करें। बिल आख़िर ज़ालिम मुतावक्किल से चुगली ख़ाना शुरू कर दिया और इसे इस दर्जा भड़काया कि वह आपकी हैसीयत से क़ता नज़र कर के आपकी ख़ाना तलाशी पर आमादा हो गया। अल्लामा इब्ने ख़लक़ान लिखते हैं कि बाज़ लोगों ने मुतावक्किल से चुगली की कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के घर में हतियार और ख़ुतूत वगैरा इनके शियों के भेजे हुए जमा हैं। नीज़ मुतावक्किल को यह भी वहम दिलाया गया कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) अपने लिए अमरे ख़िलाफ़त के तालिब हैं। मुतावक्किल ने चन्द सिपाही मुक़रर किये कि रात को उन्हें गिरफ़्तार कर लाएं। सिपाहीयों ने अचानक हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के घर में पहुंच कर देखा कि वह बालों का कुर्ता पहने सौफ़ की चादर ओढ़े तन्हा अपने हुजरे में रेग और संग रेज़ों के फ़र्श पर रू बा क़िब्ला बैठे हुए आहिस्ता आहिस्ता क़ुरान मजीद की तिलावत कर रहे हैं। सिपाहीयां ने उन्हें इसी हालत में ले जा कर मुतावक्किल के सामने पेश किया। मुतावक्किल उस वक़्त शराब लिए

हुए मैं नोशी कर रहा था। हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) को देख कर इसने ताज़ीम की और उनको अपने पहलू में बैठा लिया। सिपाहीयों ने बयान किया कि इनके घर में कोई शै अज़ किस्म कुतुब वगैरा नहीं मिली और न कोई ऐसी बात पाई गई जिससे इन पर शक व इल्ज़ाम कायम हो, यह सुन कर मुतावक्किल ने वह जाम शराब जो इसके हाथों में था हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) जानिब बढ़ाया। उन्होंने फ़रमाया मेरा गोश्त व खून कभी शराब से आलूदा नहीं हुआ। मुझे इससे माफ़ रख। मुतावक्किल ने कहा कि अगर शराब न पियो तो कुछ अश्आर पढ़ूं। हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) ने फ़रमाया कि मुझे अश्आर से कम दिलचस्पी है। मुतावक्किल न माना कि ज़रूर कुछ पढ़ो। इमाम नकी (अ.स.) ने मजबूर हो कर चन्द शेर इरशाद फ़रमाये, जिनका हासिले मक़सद यह है कि जिन लोगों ने अपनी हिफ़ाज़त की गरज़ से पहाड़ों की चोटियों पर सुकूत इख्तेयार की इनको भी मौत ने न छोड़ा और इज़ज़त की बुलन्दी से खाके जिल्लत पर गिर कर कशां कशां क़ब्रों पर पहुंचा दिया, बाद अज़ां इनको हातिफ़ ने आवाज़ दी के ऐ ! क़ब्र वालों कहां गये तुम्हारे तख्त ताज और कहां हैं तुम्हारे लिबासे नफ़ीस और क्या हुए वह नाज़ परवर्दा वह चेहरे जिनके लिए खेमैं सरा पर्दे नसब किए जाते थे। इस वक़्त क़ब्र ने इनकी जानिब से जवाब दिया कि दुनिया में वह मुद्दत तक खाते पीते रहे आखिर कार खुद लुक़्माए हशरातुल अर्ज़ हो गये और अब इन पर कीड़े रेंग रहे हैं। अल्लामाए मआसिर मौलाना सैय्यद अली नकी साहब किब्ला ने

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के अश्आर का तरजुमा इस नज़म में फ़रमाया है।

रहे पहाड़ों की चोटी पर पहरे बिठला कर
बहादुरों की हरासत में बच न सके मगर

बुलन्द किलों की इज़ज़त जो पस्त होके रही
तो कुन्ज क़ब्र में मन्जिल भी क्या बुरी पाई

सदा ये उनको दी हातिफ़ ने बादे दफ़ने लहद
कहां हैं वह तख़्त व ताज और वह लिबासे जस्ट

कहां वह चेहरे हैं जो थे हमेशा ज़रे नकाब
गुबार जिन पे कभी आने देते थे न हिजाब

ज़बाने हाल से बोले जवाब में मदफ़न
वह रूख़ ज़मीन के कीड़ों का बन गए मसकन

गोज़ाएं खाईं शराबें जो पी थीं हद से सिवा

नतीजा इसका है खुद आज बन गए वह गिज़ा।।

जब हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने यह अशआर पढ़े तो मुतावक्किल और हाज़ेरीन पर कमाले रिक्कत तारी हुई और मुतावक्किल इस क्रूर रोया कि इसकी दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई। बाद इसने हुकम दिया कि शराब उठा ली जाए और हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) को उनके घर पहुंचा दिया जाए।

(मुलाहेज़ा हो किताब दफ़ायत अयान जिल्द 1 सफ़ा 322 व नूरुल अबसार, दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 142)

अल्लामा शिबलन्जी ने इन अशआर के चार इब्तेदाई अशआर सैफ़ बिन ज़ीयज़ हमीरी के क़स्त्र पर लिखे हुए देखे गए हैं। कंज़ुल फ़वाएद कन्ज़ुल मदफून् में है कि मुतावक्किल रोते, रोते अपने हाथ से जाम ज़मीन पर फेंक देता था।

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) और शेर क़ालीन

मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक दिन मुतावक्किल के पास एक मशहूर हिन्दी शोबदे बाज़ आया और उसने बहुत से करतब दिखालाए। मुतावक्किल ने उससे कहा मेरे दरबार में एक निहायत शरीफ़ शख्स अनक़रीब आने वाला है अगर तू अपने करतब से उसे शर्मिन्दा कर दे तो मैं तुझे एक हज़ार अशरफ़ी इनाम दूंगा। उसने कहा ऐ बादशाह ज बवह आजाए तो खाने का बन्दोबस्त कर और मुझे पहलू में

बिठा दे मैं ऐसा करूंगा कि सख्त शर्मिन्दा होगा। यह सुन कर मुतावक्किल खुश हो गया और जब आप तशरीफ़ लाए तो खाना लाया गया और सब खाने के लिये बैठे। हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने ज्यों ही लुक़मा उठाया और तनावुल फ़रमाना चाहा उसने जादू के ज़ोर से उड़ाना दिया। इसी तरह उसने तीन मरतबा ऐसा किया, आख़िर यह सारा मजमा हंस पड़ा। हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) यह देख कर उस क़ालीन की तरफ़ मुतावज्जा हुए जो दीवार में लगा हुआ था और उस पर शेर की तस्वीर बनी हुई थी। आपने शेर क़ालीन को हुक्म दिया कि मुज्जसम हो कर इस काफ़िरे अज़ली को निगल ले। शेर मुज्जसम हुआ और उसने बढ़ कर काफ़िरे हिन्दी को मुसल्लम निगल लिया। इस वाकिये से दरबार में हलचल मच गई। मुतावक्किल सर निगू हो गया और इमाम (अ.स.) से दरख्वास्त करने लगा कि इस शेर क़ालीन को जो फिर अपनी हालत पर आ गया है। हुक्म दीजिए कि इस काफ़िरे हिन्दी को उगल दे। आपने फ़रमाया यह हरगिज़ न होगा और उठ कर चले गए। एक रिवायत की बिना पर आपने जवाब दिया कि अपर मूसा के अज़दहे ने फिरऔन के सांपों को निगल लेने के बाद उगल दिया होता तो यह शेर भी उगल देता। चूँकि उसने नहीं उगला था, इस लिए यह भी नहीं उगले गा।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा 209 दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 145)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) और अब्दुर रहमान मिस्री का

ज़ेहनी इन्क़ेलाब

अल्लामा अरबली लिखते हैं कि एक दिन मुतावक्किल ने बरसरे दरबार हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) को क़त्ल कर देने का फ़ैसला कर के आपको दरबार में तलब किया आप सवारी पर तशरीफ़ लाए।

अब्दुर्रहमान मिस्री का बयान है कि मैं सामरा गया हुआ था और मुतावक्किल के दरबार का यह हाल सुना कि एक अलवी के क़त्ल का हुक्म दिया गया है तो मैं दरवाज़े पर इस इन्तेज़ार में खड़ा हो गया कि देखूं वह कौन शख्स है जिसके क़त्ल के इन्तेज़ामात हो रहे हैं इतने में देखा कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) तशरीफ़ ला रहे हैं। मुझे किसी ने बताया कि इसी अलवी के क़त्ल का बन्दो बस्त हुआ है। मेरी नज़र ज़्यां ही उनके चेहरे पर पड़ी, मेरे दिल में उनकी मोहब्बत सराएत कर गई और मैं दुआ करने लगा। खुदाया तू मुतावक्किल के शर से इस शरीफ़ अलवी को बचाना। मैं दिल में दुआ कर ही रहा था कि आप नज़दीक आ पहुंचे और मुझसे बिला जाने पहचाने फ़रमाया कि ऐ अब्दुर्रहमान तुम्हारी दुआ कुबूल हो गई है और मैं इन्शा अल्लाह महफूज़ रहूंगा। चुनान्चे दरबार में आप पर कोई हाथ उठा न सका और आप महफूज़ रहे। फिर आपने मुझे दुआ दी और मैं माला माल हो गया और साहेबे औलाद हो गया। अब्दुर्रहमान कहता है कि मैं इसी वक़्त आपकी इमामत का काएल हो कर शिया हो गया।

(कश्फुल गम्मा सफ़ा 123 व दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 125)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के दौर में नकली ज़ैनब का आना

उलमा का बयान है कि एक दिन मुतावक्किल के दरबार में एक औरत जवान और ख़ूबसूरत आई और उसने आकर कहा ज़ैनब बिनते अली व फ़ात्मा हूं। मुतावक्किल ने कहा कि तू जवान है और ज़ैनब को पैदा हुए और वफ़ात पाए अर्सा गुज़र गया। अगर तुझे ज़ैनब तस्लीम कर लिया जाय तो यह कैसे माना जाए कि ज़ैनब इतनी उमर तक जवान रह सकती हैं। इसने कहा कि मुझे रसूले खुदा (स.व.व.अ.) ने यह दुआ दी थी कि मैं चालीस और पचास साल के बाद जवान हो जाऊंगी इस लिये मैं जवान हूं। मुतावक्किल ने उलमाए दरबार को जमा कर के उनके सामने इस मसले को पेश किया। सब ने कहा यह झूठी हैं। ज़ैनब के इन्तेक़ाल को अर्सा हो गया है। मुतावक्किल ने कहा कोई ऐसी दलील दो कि मैं इसे झुठला सकूं। सब ने अपनी आजिज़ी का हवाला दिया। फ़ता इब्ने खाक़ान वज़ीर मुतावक्किल ने कहा कि इस मसले को इब्ने रज़ा अली नक़ी (अ.स.) के सिवा कोई हल नहीं कर सकता। लेहाज़ा उन्हें बुलाया जाए। मुतावक्किल ने हज़रत को ज़हमते तशरीफ़ आवरी दी। जब आप दरबार में पहुंचे मुतावक्किल ने सूरते मसला पेश की। इमाम ने फ़रमाया झूठी है, मुतावक्किल ने कहा कोई ऐसी दलील

दीजिए कि मैं इसे झूठी साबित कर सकूँ। आपने फ़रमाया मेरे जद्दे नामदार का इरशाद है कि दरिन्दों पर मेरी औलाद का गोशत हराम है। ऐ बादशाह तू इस औरत को दरिन्दों में डाल दे अगर यह सचची होगी और इसका ज़ैनब होना तो दरकिनार अगर यह सय्यदा भी होगी तो जानवर इसे न छेड़ेंगे और अगर सय्यदा से भी बे बहरा और ख़ाली होगी तो दरिन्दे इसे फाड़ खाएँगे। अभी यह गुफ़्तुगू जारी ही थी कि दरबार में इशारा बाज़ी होने लगी और दुश्मनों ने मिल जुल कर मुतावक्किल से कहा कि इसका इम्तेहान इमाम अली नकी (अ.स.) ही के ज़रिये से क्यों न लिया जाए और देखा जाए कि आया दरिन्दे सय्यदों को खाते हैं या नहीं। मतलब यह था कि अगर उन्हें जानवरों ने फाड़ खाया तो मुतावक्किल का मन्शा पूरा हो जाएगा और अगर यह बत गए तो मुतावक्किल की वह उलझन दूर हो जाएगी जो ज़ैनब काज़ेबा ने डाल रखी है। गरज़ कि मुतावक्किल ने इमाम (अ.स.) से कहा ऐ इब्नुल रज़ा क्या अच्छा होता कि आप खुद बरकतुल सबआ में जा कर इसे साबित कर दीजिए कि आले रसूल स. का गोशत दरिन्दों पर हराम है। इमाम (अ.स.) तैय्यार हो गये। मुतावक्किल ने अपने बनाये हुए बरकतुल सबआ “ शेर ख़ाने’ ’ में आपको डलवा कर फाटक बन्द करवा दिया और खुद मकान के बाला ख़ाने पर चला गया ताकि वहां से इमाम के हालात का मुतालेआ करे। अल्लामा हजर मक्की लिखते हैं कि जब दरिन्दां ने दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनी तो ख़ामोश हो गये। जब आप सहन में पहुंच कर सीढ़ी पर चढ़ने लगे तो दरिन्दे आप की तरफ़ बढ़े

जिनमें तीन और बारिवायते दमे साकेबा 6 शेर भी थे, और ठहर गये और आप को छू कर आपके गिर्द फिरने लगे। आप अपनी आस्तीन उन पर मलते थे। फिर दरिन्दे घुटने टेक कर बैठ गये। मुतावक्किल इमाम (अ.स.) के मुताल्लिक छत पर से यह बाते देखता रहा और उतर आया। फिर जनाब सहन से बाहर तशरीफ़ ले आये। मुतावक्किल ने आपके पास गरां बहा सिला भेजा। लोगों ने कहा मुतावक्किल तू भी ऐसा कर के दिखला दे। उसने कहा शायद तुम मेरी जान लेना चाहते हो।

अल्लामा मौहम्मद बाकर लिखते हैं कि ज़ैनबे कज़़ाबा ने जब इन हालात को अपनी आंखों से देखा तो फ़ौरन अपनी किज़्ब बयानी का एतेराफ़ कर लिया। एक रवायत की बिना पर उसे तौबा की हिदायत कर के छोड़ दिया गया। दूसरी रवायत की बिना पर मुतावक्किल ने उसे दरिन्दों में डलवा कर फड़वा डाला।

(सवाएके मोहर्रका, सफ़ा 124, अरजहुल मतालिब सफ़ा 461, दम ए साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 145, जला लल उयून, सफ़ा 293, रौज़ातुल सफ़ा, फ़सल अल ख़ताब।)

अल्लामा इब्ने हजर का कहना है कि इस किस्म का वाक़िया अहदे रशीद अब्बासी में जनाबे यहिया बिन अब्दुल्लाह बिन हसने मुसन्ना इब्ने इमाम हसन (अ.स.) के साथ भी हुआ है।

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और मुतावक्किल का इलाज

अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि जिस ज़माने में हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) नज़र बन्दी की जिन्दगी बसर कर रहे थे। मुतावक्किल के बैठने की जगह कमर के नीचे जिसम के पिछले हिस्से में एक ज़बर दस्त ज़हरीला फोड़ा निकल आया। हर चन्द कोशिश की गई मगर किसी सूत से शिफ़ा की उम्मीद न हुई। जब जान खतरे में पड़ गई तो मुतावक्किल की मां ने मन्नत मान ली कि अगर मुतावक्किल अच्छा हो गया तो इब्ने रज़ा की खिदमत में मैं माले कसीर नज़र करूंगी और फ़तह बिन ख़क़ान ने मुतावक्किल से दरख्वास्त की कि अगर आपका हुक्म हो तो मैं मर्ज़ की कैफ़ियत अबुल हसन से बयान कर के कोई दवा तजवीज़ करवा लाऊं। मुतावक्किल ने इजाज़त दी और इब्ने ख़क़ान हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुए। उन्होंने साना वाक़िया बयान कर के दवा की तजवीज़ चाही, हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) ने फ़रमाया, कस्बे ग़नम बकरी की मेंगनियां लेकर गुलाब के अरक़ में हल कर के लगा दो, इन्शा अल्लाह ठीक हो जाएगा। वज़ीर फ़तह इब्ने ख़क़ान ने दरबार में हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की तजवीज़ पेश की लोग हंस पड़े और कहने लगे इमाम होकर क्या दवा तजवीज़ फ़रमाई है। वज़ीर ने कहा ऐ ख़लीफ़ा तजरूबे में क्या हर्ज है। अगर हुक्म हो तो मैं इन्तेज़ाम करूं। ख़लीफ़ा ने हुक्म दिया, दवा लगाई गई, मुतावक्किल की आंख खुल गई और रात भर सोया तीन दिन के अन्दर शिफ़ाए कामिल हो जाने के बाद मां

ने दस हज़ार अशरफ़ी की सर ब मुहर थैली हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की ख़िदमत में भिजवा दी।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा 207 आलामु वुरा सफ़ा 208)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की दोबारा ख़ाना तलाशी

दरन्दिों की जुब्बा साई और मुतावक्किल के इलाज में इमाम (अ.स.) की शानदार कामयाबी ने दुश्मनों के दिलों में हसद की लगी हुई आग को और भड़का दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि जान आप ही के इलाज से बची थी वह ममनूने एहसान होने के बजाए इमाम के दरपए आज़ार हो कर खुल्लम खुल्ला उन्हें सताने की तरफ़ खुसूसी तौर पर मुतावज्जा हो गया।

मुल्ला जामी अलेहिरहमा का बयान है कि वाक़ए सेहत के चन्द ही दिनों बाद लोगों ने मुतावक्किल से चुगल खाई और कहा कि हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के घर में असलाह जंग जमा हैं और अन करीब अपने जमातियों के बल बूते पर तेरी हुकूमत का तख़्ता उलट देंगे और हाकिमें वक़्त बन कर तेरे किये का बदला लेंगे। मुतावक्किल जो पहले से आले मौहम्मद स. का शदीद दुश्मन था लोगों के कहने से फिर भड़क उठा और उसने सईद को बुला कर हुकम दिया कि जिनकी नज़र बन्दी में इस वक़्त आप थे, मुतावक्किल ने हुकम दिया कि तू आधी रात को दफ़तन “इमाम के मकान में जा कर तलाशी ले और जो चीज़ बरामद हो

उसे मेरे पास ले आ। सईद हाजिब का बयान है कि मैं आधी रात को हज़रत के मकान में कोठे की तरफ़ से गया मुझे रास्ता न मिला था, क्योंकि सख़्त तारीकी थी। हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) ने अपने मुसल्ले पर से जो अन्दर बिछा हुआ था आवाज़ दी, ऐ सईद अन्धेरा है, ठहरो ! मैं शमा ला रहा हूँ। गरज़ मैंने जा कर देखा कि आप ज़मीन पर मुसल्ला बिछा ए हुए हैं और आप के घर में एक शमा के सिवा कोई असलाह नहीं है और एक वह थैली है जो मुतावक्किल की मां ने भेजी थी। मैंने इन चीज़ों को मुतावक्किल के सामने पेश कर दिया। इसने उन्हें वापस किया और वह अपने मुक़ाम पर शर्मिन्दा हुआ।

(शवाहेदुन नबूअत सफ़ा 208, जिलाउल उयून सफ़ा 294)

अल्लामा मजलिसी का बयान है कि मुतावक्किल ने आप पर पूरी सख़्ती शुरू कर दी और आप को कैद कर दिया। पहले ज़राफ़ी की कैद में रखा और ज़राफ़ी की कैद में महबूस रखा। “जिलाउल उयून सफ़ा 293” अल्लामा मौहम्मद बाकर नजफ़ी का बयान है कि मुतावक्किल ने आपके पास जाने पर मुकम्मल पाबन्दी आएद कर दी “दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 121” और हुकम दिया कि कोई भी आपके करीब तक न जाने पाए।

(कशफ़ुल ग़म्मा सफ़ा 124)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) के तसव्वुरे हुकूमत पर खौफ़े

खुदा ग़ालिब था

हज़रत की सीरते जिन्दगी और अखलाक़ व कमालात वही थे जो इस सिलसिले असमत की हर फ़र्द के अपने दौर में इम्तेआज़ी तौर पर मुशाहिदे में आते रहे थे, कैद खाने और नज़र बन्दी का आलम हो या आज़ादी का ज़माना हर वक़्त हर हाल में यादे इलाही, इबादत, खलक़े खुदा से इस्तग़ना सबाते क़दम सब इस्तक़लाल, मसाएब के हुजूम में माथे पर शिकन का न होना, दुश्मन के साथ हिलम व मुर्व्वत से काम लेना, मोहताजों और ज़रूरत मन्दो की इमादाद करना यही वह औसाफ़ हैं जो हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की सीरते जिन्दगी में नुमाया नज़र आते हैं।

क़ैद के ज़माने में जहां भी आप रहे आप के मुसल्ले के सामने एक क़ब्र खुदी तैय्यार रहती थी। देखने वालों ने जब इस पर हैरत व दहशत का इज़हार किया तो आपने फ़रमाया मैं अपने दिल में मौत का ख़याल रखने के लिये यह क़ब्र अपनी निगाहों के सामने तैय्यार रखता हूँ। हकीक़त मे यह ज़ालिम ताक़त को इसके बातिल मुतालबा ए इताअत और इस्लाम की हकीक़ी तालीमात कि नश्रो अशाअत के तर्क कर देने की ख़्वाहिश का एक अमली जवाब था। यानी ज़्यादा से ज़्यादा सलातीने वक़्त के साथ जो कुछ है वह जान का लेना। मगर जो शख़्स मौत के लिये इतना तैय्यार हो कर हर वक़्त खुदी हुई क़ब्र अपने सामने रखे। वह ज़ालिम

हुकूमत से डर कर सरे तस्लीम खम करने पर कैसे मजबूर किया जा सकता है। मगर इसके साथ दुनियावी साजिशों में शिरकत या हुकूमते वक़्त के खिलाफ़ किसी बे महल अक़दाम की तैय्यारी से सख़्त तरीन जासूसी इन्तेज़ाम के कभी आपके खिलाफ़ कोई इलज़ाम साबित न हो सका और कभी सलातीने वक़्त को कोई दलील आपके खिलाफ़ के जवाज़ की न मिल सकी, बा वजूदे कि सलतनते अब्बासिया की बुनियादें इस वक़्त इतनी खोखली हो रही थी कि दारूल सलतनत में हर रोज़ एक नई साजिश का फ़ितना खड़ा होता था।

मुतावक़िल ने खुद इसके बेटे की मुखालफ़त और उसके इन्तेज़ाई अज़ीज़ गुलाम बाग़र रूमी की इससे दुश्मनी मुतन्तसर के बाद उमराए हुकूमत का इन्तेशार और आख़िर मुतावक़िल के बेटों को खिलाफ़त से महरूम कराने का फ़ैसला मुस्तईन की दौरे हुकूमत में यहिया बिन उमर यहिया बिन हसीन बिन ज़ैद अलवी का कूफ़ा में ख़ुरूज और हसन बिन ज़ैद अल मुनक़क़ब ब दाई अलहक़ का एलाक़ए तबरस्तान पर कब्ज़ा कर लेना और मुसतक़िल सलतनत काएम कर लेना फिर दारूल सलतनत में तुरकी गुलामों की बगावत मुस्तईन का सामरा को छोड़ कर बग़दाद की तरफ़ भागना और क़िला बन्द हो जाना, आख़िर को हुकूमत से दस्त बरदारी पर मजबूर होना और कुछ अर्से बाद माअज़ बिल्लाह के साथ तलवार के घाट, फिर माज़ बिल्लाह के दौर में रूमियों का मुखालफ़त पर तैय्यार रहना। माज़ बिल्लाह को खुद अपने भाईयों से ख़तरा महसूस होना और मोवीद की जिन्दगी का

खातमा और मोफिक का बसरा में कैद किया जाना, इन तमाम हंगांमी हालात, इन तमाम शोरिशो, इन तमाम बेचैनियो और झगड़ो में से किसी में भी हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की शिरकत का शुब्हा तक न पैदा होना क्या इस तर्ज़ अमल के खिलाफ़ नहीं जो ऐसे मौक़े पर जज़्बात से काम लेने वालों का हुआ करता है। एक ऐसे अक़तेदार के मुक़ाबले में जिसे न सिर्फ़ वह हक़ व इन्साफ़ के रू से नाजाएज़ समझते हैं बल्कि इनके हाथों उन्हें जिलावतनी, कैद और एहानितों का सामना भी करना पड़ता है मगर वह जज़्बात से बुलन्द और अज़मते नफ़्स के कामिल मज़हर दुनियावी हंगामों और वक़्त के इत्तेफ़ाक़ी मौक़ां से किसी तरह का फ़ायदा उठाना अपनी बेलौस हक्क़ानियत और कोह से ग़रां सदाक़त के खिलाफ़ समझता है और मुखालफ़त पर पसे पुश्त हमला करने को आपने बुलन्द नुक़ताए निगाह और मेयारे अमल के खिलाफ़ जानते हुए हमेशा किनारा कश रहा।

(दसवें इमाम सफ़ा 9)

क़ब्रे हुसैन (अ.स.) के साथ मुतावक्किल की दोबारा बेअदबी

247 हिजरी

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) को कैद करने के बाद फिर मुतावक्किल क़ब्रे इमाम हुसैन (अ.स.) के इन्हेदाम की तरफ़ मुतावज्जा हुआ और चाहा कि नेस्त व नाबूद कर दे। मुवर्रिख़ ने लिखा है कि जब इसे यह मालूम हुआ कि करबला में

कब्रे हुसैनी की ज़्यारत के लिये एतराफ़े आलम से अक्रीदतमंदों की आमद का तांता बंधा हुआ है और बेशुमार हज़रात ज़्यारत को आते हैं तो मुतावक्किल की आतिशे हसद भड़क उठी और इसने इस सिलसिले को बन्द करने का तैहय्या कर लिया और यह भी न सोचा कि यह वही कब्र है जिस पर हस्बे तहकीक़ पीराने पीर शेख़ अब्दुल कादिर जिलानी सत्तर हज़ार फ़रिशते आसमान से उतर कर ख़ानाए काबा का तवाफ़ करने के बाद जाते हैं वहां रोते हैं और इसकी ज़्यारत करते और मुजावरत के फ़राएज़ रोज़ाना अदा करते हैं।

(गनीयतुल तालबैन सफ़ा 374, मजमाउल बहरैन सफ़ा 502)

आमाली शेख़ तूसी और जिलाउल उयून में है कि मुतावक्किल ने अपनी फ़ौज के दस्ते को ज़्यारत के रोकने और नहरे अलक़मा को काट के कब्र पर से गुज़ारने को भेजा और हुक्म दिया जो शख्स ज़्यारत के लिये आए उसे क़त्ल कर दिया जाए और बाज़ उलमा के बयान के मुताबिक़ यह भी हुक्म दिया गया कि पहले हाथ काटे जायें फिर अगर बाज़ न आए तो क़त्ल कर दिये जाएं यह एक ऐसा हुक्म था जिसने मोतक़ेदीन को बेचैन कर दिया। हज़रत ज़ैद मजनून को दोस्त दाराने आले मौहम्मद स. में से थे, यह ख़बर सुन कर ज़्यारत के लिये मिस्र से चल कर कुफ़े पहुंचे वहां पहुंच कर हज़रत बहलोल दाना से मिले जो उस वक़्त ब मसलेहत अपने को दिवाना बनाए हुए थे। दोनों में तबादलाए ख़यालात हुआ और दोनों ज़ियारते कब्रे मुनव्वर के लिये करबला रवाना हो गये। उन्होंने आपस में तय किया था कि

हाथ काटे जाये तो कटवायेंगे कत्ल होने की ज़रूरत महसूस हो तो कत्ल हो जायेंगे लेकिन ज़ियारत ज़रूर करेंगे। जब यह दोनों करबला पहुंचे तो उन्होंने देखा कि कब्र की तरफ नहर का पानी कब्र पर गुज़रने की बे अदबी नहीं करता। पानी कब्र तक पहुंच कर फट जाता है और कतरा कर एतराफ व जानिबे कब्र का बोसा लेता हुआ गुज़रता है। यह हाल देख कर इनका जज़्बाए मोहब्बत और उभर गया, यह अभी इसी मुक़ाम पर ही थे कि वह शख्स इनकी तरफ मुतावज्जा हुआ जो इन्हेदामें कब्र पर मुताअय्यन था। उसने पूछा कि तुम क्यों आये हो? उन लोगों ने कहा ज़ियारत के लिये। उसने जवाब दिया जो ज़ियारत को आए, मैं उसे कत्ल करने के लिये मुक़र्रर किया गया हूँ। इन हज़रात ने कहा हम कत्ल होने की तमन्ना में ही आए हैं। यह सुन कर वह इनके पैरों पर गिर पड़ा और अपने अमल से ताएब हो कर मुतावक्किल के पास वापस गया। मुतावक्किल ने उसे कत्ल करा कर सूली पर चढ़ा दिया। फिर पैरों में रस्सी बंधवा कर बाज़ार में खिंचवाया। ज़ैद को जब यह वाक़िया मालूम हुआ, फ़ौरन सामरा पहुंचे और उसकी लाश दफ़न की और उस पर कुरान मजीद पढ़ा।

अभी हज़रत ज़ैद सामरा में ही थे कि एक दिन बड़े धूम धाम से एक जनाज़ा उठाया गया स्याह अलम साथ था अरकाने दौलत और अमाएदीन सलतनत हमराह थे। चारों तरफ़ से रोने की आवाज़ें आ रही थीं। ज़ैद ने समझा कि शायद मुतावक्किल का इन्तेक़ाल हो गया है। यह मालूम करने के बाद हज़रत ज़ैद ने एक

आहे सर्द खींची और कहा अल्लाह अल्लाह फ़रज़न्दे रसूल स. इमाम हुसैन (अ.स.) करबला में तीन रोज़ के भुके प्यासे शहीद कर दिये गये। इन पर कोई रोने वाला नहीं था बल्कि उनकी क़ब्र के निशानात मिटाने के भी लोग दरपए हैं और एक मन्हूस कनीज़ का यह एहतिराम है इसके बाद इसी किस्म के मज़ामीन पर मुश्तमिल चन्द अश्आर लिख कर हज़रत ज़ैद मजनून ने मुतावक्किल के पास भिजवा दिया, उसने उन्हें मुक़य्यद कर दिया। मुतावक्किल ने ख़्वाब में देखा कि एक मर्दे मोमिन आए हैं और कहते हैं कि ज़ैद को इसी वक़्त रेहा कर दे। वरना मैं तुझे अभी अभी हलाक कर दूंगा। चुनान्चे उसने उसी वक़्त रेहा कर दिया।

मुतावक्किल का क़त्ल

मुतावक्किल के ज़ुल्म व तआद्दी ने लोगों को जिन्दगी से बेज़ार कर दिया था। अब इसकी यह हालत हो चुकी थी कि बरसरे आम आले मौहम्मद स. को गालियां देने लगा था। एक दिन उसने अपने बेटे मुस्तनसर के सामने हज़रत फ़ात्मा ज़हरा स. के लिए नासाज़ अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए। मुन्तसार से दरयाफ़्त किया कि जो शख्स ऐसे अलफ़ाज़ बिन्ते रसूल स. के लिए इस्तेमाल करे उसके लिए क्या हुकम है। उलमा ने कहा वह वाजेबुल क़त्ल है। तारीख़ अबुल फ़िदा में है कि मुनतासिर ने रात के वक़्त बहालते ख़लवत बहुत से आदमियों की मदद से मुतावक्किल को क़त्ल कर दिया। हादी अल तवारीख़, तारीख़े इस्लाम, जिल्द 1 सफ़ा 66 दमतुस्

साकेबा सफ़ा 147 में है कि यह वाक़िया चार शव्वाल 247 हिजरी का है बाज़ मासरीन लिखते हैं मुतावक्किल ने अपने अहदे सलतनत में कई लाख शिया क़त्ल कराए हैं।

इमाम अली नक़ी (अ.स.) को पैदल चलने का हुक़म

अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि क़त्ले मुतावक्किल से तीन चार दिन क़ब्ल इसी ज़ालिम मुतावक्किल ने हुक़म दिया कि मेरी सवारी के साथ तमाम लोग पैदल तफ़रीह के लिये चलें। हुक़म में इमाम (अ.स.) ख़ास तौर पर मामूर थे। चुनान्चे आप भी कई मिल पैदल चल कर वापस तशरीफ़ लाए और आपको इस दर्जे तअब तकलीफ़ हुआ कि आप सख़्त अलील हो गये।

(जिला अल उयून सफ़ा 292)

हज़रत इमाम अली नक़ी (अ.स.) की शहादत

मुतावक्किल के बाद आप का बेटा मुसतनसिर फिर मुसतईन फिर 252 हिजरी में माज़ बिल्लाह ख़लीफ़ा हुआ मोतिज़ इब्ने मुतावक्किल ने भी अपने बाप की सुन्नत को नहीं छोड़ा और हज़रत के साथ सख़्ती ही करता रहा। यहां तक कि उसी ने आपको ज़हर दे दिया। समा अल मोताज़, अनवारूल हुसैनिया जिल्द 2

सफ़ा 55 और आप व तारीख 2 रजब 254 हिजरी बरोज़ दो शम्बा इन्तेकाल फ़रमा गए।

(दमतुस् साकेबा जिल्द 3 सफ़ा 149)

अल्लामा इब्ने जौज़ी तज़क़िराए खास अल मता में लिखते हैं कि आप मोताज़ के ज़माने ख़िलाफ़त में शहीद किए गये हैं आपकी शहादत ज़हर से हुई है अल्लामा शिबलन्जी लिखते हैं कि आपको ज़हर से शहीद किया गया। नूरुल अबसार सफ़ा 150, अल्लामा इब्ने हजर लिखते हैं कि आप ज़हर से शहीद हुए हैं सवाएके मोहरेका सफ़ा 124, दमतुस् साकेबा सफ़ा 185 में है कि आपके इन्तेकाल से क़ब्ल इमाम हसन अस्करी (अ.स.) को मवारिस अम्बिया वग़ैरा सुपुर्द फ़रमाते थे। वफ़ात के बाद इमाम हसन अस्करी (अ.स.) ने गरेबान चाक किया तो लोग मोतरिज़ हुए। आपने फ़रमाया कि यह सुन्नते अम्बिया है। हज़रत मूसा ने वफ़ाते हज़रत हारून पर अपना गरेबान फाड़ा था।

(दमतुस् साकेबा सफ़ा 185, जिला अल उयून सफ़ा 294)

आप पर इमाम हसन अस्करी (अ.स.) ने नमाज़ पढ़ी और आप सामरा ही में दफ़न किए गये इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेउन अल्लामा मजलिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपकी वफ़ात इन्तेहाई कसमा पुर्सी की हालत में हुई इन्तेकाल के वक़्त आपके पास कोई भी न था।

(जिला अल उयून सफ़ा 292)

आपकी अज़वाज व औलाद

आपकी कई बीवीयां थीं उनकी कई औलादें पैदा हुईं जिनके असमा यह हैं।

इमाम हसन अस्करी (अ.स.) 2. हुसैन बिन अली 3. मौहम्मद बिन अली 4. जाफ़र बिन अली 5. दुख्तर मासूमा आयशा बिनते अली।

(इरशाद मुफ़ीद सफ़ा 602 व सवाएके मोहर्रैका सफ़ा 129 प्रकाशित मिस्र)

हाशिया

अल्लामा काज़ी मौहम्मद सुलैमान मन्सूर पूरी रिटायर्ड जज रियासत पटयाला लिखते हैं कि इमाम अली नकी रज़ी अल्लाह अन्हो ताला के दो फ़रज़न्द अबू अब्दुल्लाह जाफ़र कज़़ाब और हसन अस्करी र. से नस्ल जारी है। अबू अब्दुल्लाह जाफ़र के नाम के साथ लक़ब कज़़ाब बाज़ लोग इस लिए शामिल किया करते हैं कि उन्होंने अपने भाई इमाम हसन असकरी (अ.स.) की वफ़ात के बाद खुद इमाम होने का दावा किया था। इनकी औलाद इनको जाफ़र तव्वाब कहती है और अपने आप को रिज़वी कहलाती है। सादाते अमरोहा इन्हीं की नस्ल से हैं। किताब रहमतुललिल आलमीन जिल्द 2 पेज न. 146 प्रकाशित लाहौर मेरे नज़दीक मुसन्निफ़ को या तो इल्म नहीं या उन्हें धोखा हो गया है दर अस्ल जनाबे जाफ़र अलैहिर्रहमा की औलाद को नक़वी कहा जाता है।

[[अलहम्दो लिल्लाह ये किताब: अबुलहसन हज़रत इमाम अली नकी (अ.स) जो कि किताब: चौदह सितारे एक हिस्सा है, पूरी टाईप हो गई खुदा वंदे आलम से दुआगौं हूं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन फाउनडेशन को तरक्की इनायत

फरमाए कि जिन्होंने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क) के लिए
टाइप कराया।]]

18 -03 -2016

Contents

वालैदेन.....	2
इमाम अली नकी (अ.स.) की विलादते बासआदत	3
इस्मे गिरामी, कुन्नीयत और अलकाब.....	3
आपके अहदे हयात और बादशाहाने वक्त	4
हज़रत इमाम मौहम्मद तकी (अ.स.) का सफ़रे बग़दाद और हज़रत इमाम नकी (अ.स.) की वली अहदी.....	5
इमाम अली नकी (अ.स.) का इल्मे लदुन्नी	6
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के करामात और आपका इल्मे बातिन	9
इमाम अली नकी (अ.स.) और मुतावक्किल की तख़्त नशीनी.....	15
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और सहीफ़ा ए कामेला की एक दुआ	16
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के आबाओ अजदाद की क़ब्रों के साथ मोतावकिल अब्बासी का सुलूक.....	17
इमाम अली नकी (अ.स.) की मदीने से सामरा तलबी	26
इमाम अली नकी (अ.स.) की नज़र बन्दी.....	33
इमाम अली नकी (अ.स.) का जज़बा ए हमदर्दी.....	33
इमाम अली नकी (अ.स.) की हालत सामरा पहुंचने के बाद.....	35

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और सवारी की तेज़रफ़्तारी.....	36
दो माह पहले पहले काज़ी की मौत की खबर	37
आपका एहतिराम जानवरों की नज़र में.....	37
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और ख़्वाब की अमली ताबीर.....	38
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और फ़ुक़हाए मुस्लेमीन	39
शाहे रोम को हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) का जवाब.....	42
मुतावक्किल के कहने से इब्ने सकीत व इब्ने अकसम का इमाम अली नकी (अ.स.) से सवाल	43
क़ज़ा व क़दर के मुताअल्लिक़ इमाम अली नकी (अ.स.) की रहबरी व रहनुमाई	44
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की ख़ाना तलाशी.....	45
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और शेरे क़ालीन.....	49
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और अब्दुर रहमान मिस्री का ज़ेहनी इन्केलाब	51
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के दौर मे नकली ज़ैनब का आना	52
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) और मुतावक्किल का इलाज.....	55

हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की दोबारा खाना तलाशी.....	56
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) के तसव्वुरे हुक्मत पर खौफ़े खुदा ग़ालिब था	58
क़ब्रे हुसैन (अ.स.) के साथ मुतावक्किल की दोबारा बेअदबी 247 हिजरी.....	60
मुतावक्किल का क़त्ल	63
इमाम अली नकी (अ.स.) को पैदल चलने का हुक्म.....	64
हज़रत इमाम अली नकी (अ.स.) की शहादत	64